04 - रेखाओं के वितान में स्मृतियों की गूंज

05 - अजंता, एलोरा एवं बंबई कला विद्यालय

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 19 अप्रैल, 2026

06 - भाजपा सरकार बनने पर जनकल्याण के कार्य तेज होंगे...

07 - क्या आर्थिक संरक्षण पर महिलाओं को...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 226, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

काशी : सुबह सवेरे

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

बाबा! डूबती कश्ती को
किनारा मिल जाए,
चुनाव में कोई अच्छा
सा नारा मिल जाए।

एक-एक कर सभी
निज़ाम हारते जा रहे हैं,
भूख से अधमरे पशुओं
को चारा मिल जाए।

पूरा आकाश न मिले
कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता,
हमें तो फ़क़त चाँद
और सितारा मिल जाए।

हम भी उत्सव मना लें,
थोड़ी सा खुश हो लें,
अंबर में उड़ानें को कोई
गुब्बारा मिल जाए।

बहुत दिनों से आँखों ने
रंगीनियाँ नहीं देखी,
काश! हमें भी कोई हसीं
नजारा मिल जाए।

हमारे भी सोए हुए नसीब
फिर से जग जाएँ,
कहीं से कोई हल्का सा
इशारा मिल जाए।

– डॉ. रामेश्वरम तिवारी

'एमपी ई-सेवा' से डिजिटल गवर्नेंस को मिला सशक्त आधार: मुख्यमंत्री

56 विभागों की 1700 सेवाएँ एक ही पोर्टल पर उपलब्ध

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 'एमपी ई-सेवा पोर्टल और मोबाइल ऐप' के माध्यम से प्रदेश में डिजिटल गवर्नेंस को सशक्त आधार मिला है। इससे नागरिक सेवाएँ अब अधिक सरल, सुगम और सुलभ हुई हैं। डिजिटल तकनीक आज सुशासन की आधारशिला बन चुकी है और प्रदेश इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ते हुए देश में नई पहचान स्थापित कर रहा है। अब प्रदेशवासियों को विभिन्न विभागों की सेवाओं के लिए अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर जाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक ही मंच पर सभी सुविधाएँ सहज, त्वरित और पारदर्शी रूप में उपलब्ध कराई जा रही हैं। इस पहल से सेवा वितरण प्रणाली अधिक जवाबदेह और सुव्यवस्थित बनी है। साथ ही नागरिकों के समय एवं संसाधनों की बचत सुनिश्चित हुई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह एकीकृत नागरिक सेवा मंच 56 विभागों की 1700 से अधिक सरकारी सेवाओं और योजनाओं को एक ही डिजिटल विंडो पर उपलब्ध करा रहा है। वर्ष 2026 तक 100 प्रतिशत ई-सेवा डिलीवरी का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जो प्रदेश को डिजिटल गवर्नेंस के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम (एमपीएसईडीसी) के सेंटर फॉर एक्सीलेंस द्वारा विकसित यह प्लेटफॉर्म नागरिकों, विभागों एवं सेवाओं को एकीकृत डिजिटल इको-सिस्टम में जोड़ते हुए सुशासन को और अधिक प्रभावी तथा परिणामोन्मुख बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

एकीकृत पोर्टल पर सभी सेवाएँ: प्रक्रिया हुई सरल- एमपी ई-सेवा पोर्टल पर विभिन्न विभागों की 1700 सेवाओं को एकीकृत कर नागरिकों को बार-बार अलग-अलग पोर्टल पर जाने और दस्तावेज़ जमा करने की आवश्यकता समाप्त की गई है। नागरिक अब eseva.mp.gov.in और मोबाइल ऐप के माध्यम से पात्रता जांच, आवेदन, स्टेटस ट्रैकिंग और अनुमोदन जैसी सभी सुविधाएँ एक ही स्थान पर प्राप्त कर सकते हैं। पोर्टल पर आधार आधारित प्रमाणीकरण, ई-साइन और डिजिटल प्रमाणपत्र की व्यवस्था से पूरी प्रक्रिया पेपरलेस और फेसलेस बनाई गई है, जिससे पारदर्शिता और दक्षता दोनों में वृद्धि हुई है।

समग्र पोर्टल से एकीकरण: ऑटो-वेरिफिकेशन की सुविधा- 'एमपी ई-सेवा' को समग्र सामाजिक सुरक्षा मिशन के समग्र पोर्टल से जोड़ा गया है। प्रत्येक परिवार को 8 अंकीय परिवार आईडी और हर सदस्य को 9 अंकीय सदस्य आईडी दी गई है। इससे ऑटो-वेरिफिकेशन की प्रक्रिया को सक्षम बनाया गया है। इससे पात्रता निर्धारण स्वतः हो जाता है और अनावश्यक देरी व दोहराव समाप्त होता है। पोर्टल की प्रमुख विशेषता 'ऑटो-फेचिंग डॉक्युमेंट्स' है, जिससे नागरिकों को बार-बार दस्तावेज़ अपलोड करने की आवश्यकता नहीं रहती।

सुगम, सुरक्षित एवं नागरिक केंद्रित 'ऐप-डिज़ाइन'

एमपी ई-सेवा पोर्टल को मोबाइल-फर्स्ट दृष्टिकोण के साथ विकसित किया गया है। इसमें बहुभाषीय सुविधा के साथ दिव्यांगजनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विशेष डिज़ाइन किया गया है, जिससे शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के नागरिक आसानी से इसका उपयोग कर सकें। प्लेटफ़ॉर्म पर अब तक 2 लाख 14 हजार से अधिक ट्रांसेक्शन दर्ज किए जा चुके हैं। इनमें 3 हजार 446 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जबकि 1 लाख 64 हजार 600 से अधिक ट्रैक/डाउनलोड गतिविधियाँ और 45 हजार 954 समग्र पात्रता जांचें की गई हैं।

● देश के नाम संबोधित करते हुए पीएम मोदी बोले

महिला आरक्षण बिल पास नहीं हुआ, माफी मांगता हूं

जिन लोगों ने आधी आबादी का अधिकार छीना, उन्हें इस पाप की सजा मिलेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार शाम 8.30 बजे से महिला आरक्षण पर देश को संबोधित कर रहे हैं। उन्होंने कहा, इस बिल में संशोधन नहीं हो पाया। मैं सभी माताओं-बहनों से माफी मांगता हूं।

उन्होंने कहा, मेरे लिए देशहित सर्वोपरि है, जब कुछ लोगों के लिए दल हित सबकुछ हो जाता है, दल हित देश हित से बड़ा हो जाता है। तो नारी शक्ति को ही इसका खामियाजा उठाना पड़ता है।

पीएम ने कहा कि कांग्रेस, टीएमसी, डीएमके जैसे विपक्षी दल इस भ्रूणहत्या के गुनहगार हैं। ये देश के संविधान के अपराधी हैं। नारी शक्ति के अपराधी हैं। जिन लोगों ने आधी आबादी का अधिकार छीना, उन्हें इस पाप की सजा मिलेगी।

लोकसभा में शुक्रवार को महिला आरक्षण से जुड़ा संविधान (131वां संशोधन) बिल पास नहीं हो सका था। इस बिल में लोकसभा सीटों को 543 से बढ़ाकर 816 करने और महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रस्ताव था। महिलाओं के सपने को कुचल दिया- आज भारत का हर नागरिक देख रहा है कि कैसे भारत की नारी शक्ति की उड़ान को रोक दिया गया। उनके सपनों को बेरहमी से कुचल दिया गया।

विपक्ष ने मेजें थपथपाईं

कांग्रेस, डीएमके, टीएमसी और समाजवादी पार्टी जैसे दलों की स्वार्थी राजनीति का नुकसान देश की नारी शक्ति को उठाना पड़ा है। कल देश की करोड़ों महिलाओं की नजर संसद पर थी। देश की नारी शक्ति देख रही थी। मुझे भी ये देखकर बहुत दुख हुआ कि जब ये नारी हित का प्रस्ताव गिरा तो कांग्रेस, डीएमके, टीएमसी, सपा जैसी परिवारवादी पार्टियां खुशी से तालियां बजा रही थीं।

नारी अपमान नहीं भूलती

कल विपक्ष ने जो भी किया वह केवल टेबल पर थाप नहीं थी। वह नारी के स्वाभिमान पर उसके आत्म सम्मान पर चोट थी। और नारी सब भूल जाती है, अपना अपमान कभी नहीं भूलती। इसलिए संसद में कांग्रेस के उसके सहयोगियों के व्यवहार की कसक, हर नारी के मन में हमेशा रहेगी। देश की नारी जब भी अपने क्षेत्र में इन नेताओं को देखेगी तो वह याद करेगी कि इन्हीं लोगों ने संसद में महिला आरक्षण को रोकने का जश्न मनाया था, खुशियां मनाई थीं।

विपक्ष को उसके पाप की सजा जरूर मिलेगी- कल नारी शक्ति वंदन विधेयक का जिन लोगों ने विरोध किया है, उनसे मैं दो टूक कहूंगा कि ये लोग नारी शक्ति को फॉर ग्रांटेड ले रहे हैं। वे ये भूल रहे हैं कि 21वीं सदी की नारी देश की हर घटना पर नजर रख रही है। वह उनकी मंशा भांप रही है और सच्चाई भी भली-भांति जान चुकी है। महिला आरक्षण विधेयक का विरोध कर के विपक्ष ने जो पाप किया है, उसकी सजा उन्हें जरूर मिलेगी।

ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट फिर बंद करने का कर दिया ऐलान

तेहरान (एजेंसी)। ईरान की केंद्रीय सैन्य कमान ने शनिवार को एक बार फिर से होर्मुज स्ट्रेट बंद करने की घोषणा कर दी है। इसके साथ ही ईरान और अमेरिका के बीच तनाव एक बार फिर से बढ़ता दिख रहा है। सैन्य कमान ने घोषणा की है कि वह होर्मुज जलडमरूमध्य का सख्त प्रबंधन फिर से शुरू करेगी। इसके साथ ही उसने वाशिंगटन के साथ बातचीत के तहत इस रणनीतिक मार्ग को खोलने के अपने पहले के फैसले को पलट दिया है। ईरान की सरकारी टेलीविजन पर जारी एक बयान में मुख्यालय ने कहा कि वाशिंगटन ने ईरान के बंदरगाहों से आने-जाने वाले जहाजों की नौसैनिक नाकेबंदी जारी रखकर अपना वादा तोड़ दिया है। सैन्य कमान के बयान में कहा गया है कि जब तक अमेरिका, ईरान आने वाले सभी जहाजों के लिए आवाजाही की स्वतंत्रता बहाल नहीं कर देता तब तक होर्मुज जलडमरूमध्य की स्थिति सख्त नियंत्रण में रहेगी। यानि ईरान ने साफ कर दिया है जब तक अमेरिका होर्मुज के ब्लॉकेड को हटाता नहीं है तब तक ईरान होर्मुज को बंद रखेगा।

सीटें बढ़ाना सत्ता में बने रहने की थी साजिश

प्रियंका गांधी बोलीं-खुश हूं कि विपक्ष ने विरोध किया, कहा-हमें महिला विरोधी कहकर मसीहा नहीं बन सकते

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने शनिवार को कहा, 'कल लोकसभा में जो हुआ वो लोकतंत्र की बहुत बड़ी जीत है। सरकार परिसीमन और महिला आरक्षण के जरिए सत्ता में बने रहने की साजिश कर रही थी।' उन्होंने कहा, मैं बहुत खुश हूं कि लोकसभा में सीटें बढ़ाने के लिए लाया गया बिल गिर गया। सत्ता पक्ष हमें महिला विरोधी कहकर मसीहा नहीं बन सकता। शुक्रवार को लोकसभा में सरकार संविधान का 131वां संशोधन बिल लाई थी। सरकार इसे पास नहीं करा पाई। यह 54 वोट से गिर गया। इसके जरिए संसद की 543 सीटें बढ़ाकर 850 करने का प्रावधान था।

विपक्ष को महिला विरोधी बताकर मसीहा बनना चाहते थे

प्रियंका ने कहा- मेरे ख्याल से पूरी साजिश जो रची गई वह इसलिए कि हमें सत्ता में रहना है। वह अभी नहीं किया जाएगा परिसीमन 2029 तक नहीं हो पाएगा। वह महिलाओं के नाम पर किया जा रहा था। ताकि हमें स्वतंत्रता मिल जाए सत्ता में बने रहने की। उन्होंने सोचा पारित हो जाएगा तो जीत नहीं होता तो हम हर नेता को महिला विरोधी साबित करके महिलाओं के लिए मसीहा बन जाएंगे। महिलाएं देख रही हैं। उन्नाव हाथरस, मणिपुर में देखा.. आप संसद में खड़े होकर कह रहे हैं कि आप उनके मसीहा बनना चाहते हैं।

मीडियाबाजी और पीआर अब नहीं चल पाएगा

प्रियंका ने कहा- आज की महिलाओं की समस्याएं बढ़ रही हैं, संघर्ष बढ़ रहा है। बेवकूफ नहीं हैं महिलाएं। वो सब कुछ देख रही हैं। मीडियाबाजी, पीआर..अब नहीं चलेगी। कुछ ठोस करना है तो आप 2023 में जो सर्व सहमति से जो विधेयक पारित हुआ था, सारे दलों ने उसका समर्थन किया था, उसे लाइए। उसमें अगर कुछ एकाध संशोधन करना है तो करिए उसे अभी लागू करिए। महिलाओं को हक दीजिए। लेकिन उसको आप घुमाकर दूसरी चीजों से जोड़कर गुमराह करने की कोशिश मत कीजिए। हम सब तैयार हैं।

यमुना एक्सप्रेसवे पर 'नया हाथरस' शहर बसाने की तैयारी

अगले नौ महीने के भीतर मास्टर प्लान का ड्रॉफ्ट होगा तैयार

ग्रेटर नोएडा (एजेंसी)। यमुना एक्सप्रेसवे के किनारे 4000 हेक्टेयर जमीन पर हाथरस अर्बन सेंटर यानी नया हाथरस शहर बसाने की कवायद शुरू हो चुकी है। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने वाली इस योजना के लिए कंपनी चुन ली गई है, जो 9 माह में मास्टर प्लान तैयार करेगी। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अधिकारी ने बताया कि नया हाथरस के मास्टर प्लान तैयार करने को तेलंगाना की आरवी इंजीनियरिंग कंसल्टेंट लिमिटेड का चयन किया गया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 19 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

महाराष्ट्र के सभी स्कूलों में मराठी पढ़ाना अनिवार्य

● नियम का उल्लंघन करने पर 1 लाख तक का जुर्माना, मान्यता भी हो सकती रद्द

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के स्कूली शिक्षा विभाग ने शुक्रवार को राज्य के सभी स्कूलों में मराठी पढ़ाना जरूरी करने के लिए एक नया सरकारी प्रस्ताव जारी किया। इसमें बार-बार नियम तोड़ने पर 1 लाख रुपये तक का जुर्माना और मान्यता रद्द होने की चेतावनी दी गई है। यह निर्देश महाराष्ट्र के सभी स्कूलों में मराठी भाषा की जरूरी टीचिंग

और लर्निंग एक्ट, 2020 के तहत, सभी संस्थानों पर लागू होता है, चाहे उनका बोर्ड, मीडियम या मैनेजमेंट कुछ भी हो। आदेश के अनुसार हर स्कूल में काबिल मराठी टीचरों की नियुक्ति भी जरूरी की गई है। एक मल्टी-टियर लागू करने के तरीके के तहत, शिक्षा के डिविजनल डिप्टी डायरेक्टर को नियम का पालन पक्का करने के लिए सक्षम अधिकारी बनाया गया है। नया एकेडमिक साल शुरू होने के दो महीने के अंदर स्कूलों का इंस्पेक्शन किया जाएगा। नियम तोड़ने वाले संस्थानों को नोटिस जारी किया जाएगा और जवाब देने के लिए 15 दिन का समय दिया जाएगा।

तमिलनाडु में भीषण सड़क हादसा, 9 लोगों की मौत

● ट्रैवलर सड़क से उतरकर खाई में जाकर गिरी, पांच घायल

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के वलपरई में शुक्रवार को सड़क हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा तब हुआ, जब टेम्पो ट्रैवलर अनियंत्रित होकर हेयरपिन मोड़ से फिसलकर खाई में गिर गया। पुलिस के मुताबिक, गाड़ी केरलम के पेरिंथलमन्ना से आए 13 पर्यटकों को लेकर वलपरई से लौट रहा था। 13वें हेयरपिन

मोड़ पर संतुलन बिगड़ा और वाहन फिसलकर 9वें हेयरपिन मोड़ तक गिर गया हादसे में 1 पुरुष और 8 महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई। घायलों को रेस्क्यू कर एंबुलेंस से पोलाची के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जब किसी ऊंचे पहाड़ पर चढ़ना होता है, तो सीधी सड़क बनाना मुमकिन नहीं होता। इसलिए, ऊंचाई पर धीरे-धीरे चढ़ने के लिए सड़क को सांप की तरह घुमावदार बनाया जाता है। जहां सड़क एकदम से मुड़कर वापस उसी दिशा के समानांतर हो जाती है, उसे ही हेयरपिन मोड़ कहते हैं।

राहुल पर एफआईआर का अपना आदेश हाईकोर्ट जज ने बदला

● बिना नोटिस केस दर्ज करना सही नहीं माना; याचिकाकर्ता बोला-सीजेआई से शिकायत करेंगे

लखनऊ (एजेंसी)। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने सांसद राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का अपना ही आदेश बदल दिया है। मामला दोहरी नागरिकता से जुड़ा है। कोर्ट ने शनिवार को अपनी वेबसाइट पर नया आदेश जारी किया। कोर्ट ने बताया कि शुक्रवार (17 अप्रैल) को सुनवाई हुई थी। इसमें याचिकाकर्ता समेत केंद्र और राज्य सरकार के वकीलों से पूछा गया था कि क्या राहुल गांधी को नोटिस जारी करने की जरूरत है। वकीलों ने नोटिस जारी करने की कोई जरूरत नहीं बताई थी। इसके बाद एफआईआर दर्ज करने का आदेश पारित कर दिया गया था। हालांकि, आदेश टाइप होने से पहले न्यायमूर्ति सुभाष विद्यार्थी ने फिर से फैसले को परखा।

58 कमांडों का घेरा, जेड+ सुरक्षा और आलीशान बंगला

दिल्ली में नीतिश कुमार के शाही ठिकाने के सियासी मायने

पटना (एजेंसी)। बिहार के पूर्व सीएम और राज्यसभा सांसद नीतिश कुमार को दिल्ली में बंगला नंबर- 9 आवंटित कर दिया गया है। राज्यसभा सांसद के तौर पर नीतिश कुमार साधारण घर में नहीं, बल्कि दिल्ली के टाइप-8 कैटेगरी वाले एक आलीशान बंगले में रहेंगे। इस बंगले की खासियत ये है कि इसमें तमाम आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। नीतिश कुमार की सुरक्षा भी दिल्ली पुलिस या स्थानीय प्रशासन के हाथ में नहीं, बल्कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स के हाथों में होगा। नीतिश कुमार राज्यसभा के विशेष सत्र में शामिल होने के लिए दिल्ली जाएंगे। उनके दिल्ली पहुंचने से पहले सभी इंतजाम कर दिए गए हैं। सुरक्षा, कमांडो घेरा

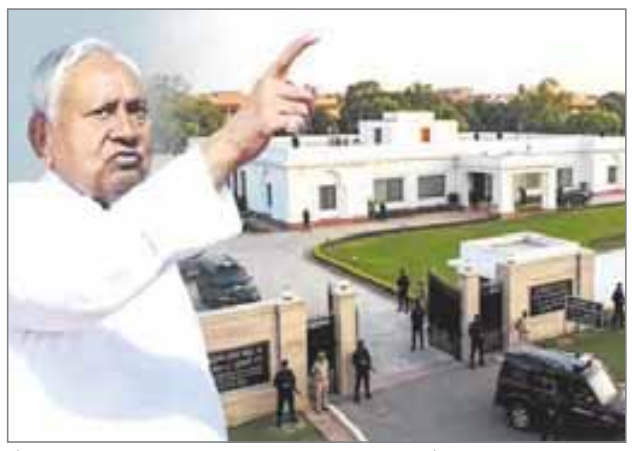

और आलीशान बंगला उनके सियासी प्रभाव की कहानी कहने के लिए काफी हैं। लेकिन राजनीति के जानकार इसमें भी मायने तलाश रहे हैं। सबसे पहले सुरक्षा की बात करें, तो वो इतनी कड़ी होगी कि परिंदा भी पर नहीं मार पाएगा। सुरक्षा एजेंसियों के मुताबिक येलो बुक और ब्लू बुक के कड़े नियमों के मुताबिक नीतिश कुमार के चारों तरफ 58 कमांडों का घेरा होगा। उसके अलावा जेड प्लस सिक्योरिटी ऐसी होगी, जिसे पार करना किसी के लिए कठिन होगा। इसके अलावा उनके आवास के आस- पास 10 सशस्त्र स्थायी गार्ड तैनात होंगे। उसके अलावा 6 पीएसओ चौबीसों घंटे उनके साये की तरह साथ रहेंगे। उनके साथ 24 जवान दो एस्कॉर्ड गाड़ियों में ड्यूटी के लिए तैनात रहेंगे।

कमांडों का रहेगा घेरा, सुरक्षा बल हर समय रहेंगे तैनात

जानकारी के मुताबिक सुरक्षा के बड़े तामझाम की निगरानी के लिए एक वरिष्ठ पुलिसकर्मी को इंचार्ज बनाया गया है। आवास पर आने- जाने वाले की जांच के लिए 6 कर्मचारियों की तैनाती की गई है। उसके अलावा 5 वॉचर्स दो अलग- अलग शिफ्टों में सभी गतिविधि पर पैनी नजर रखेंगे। उसके अलावा उनके वाहनों के लिए 6 प्रशिक्षित ड्रॉवर 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात रहेंगे। कुल मिलाकर दिल्ली में नीतिश कुमार के रहने और कहीं आने जाने के लिए सुरक्षा के बेहतरीन इंतजाम किए गए हैं। बताया जा रहा है कि नीतिश कुमार की सुरक्षा और उनके आलीशान बंगले को देखते हुए उनकी सियासी अहमियत को समझा जा सकता है। जानकार मानते हैं कि नीतिश कुमार दिल्ली में बैठे- बैठे बिहार पर भी नजर रखेंगे। जेडीयू सरकार में हिस्सेदार है। विकास योजनाओं के साथ बिहार के मुख्यमंत्री के काम काज पर भी उनकी नजरें रहेंगी।

डाटा संकलन, फील्ड की चुनौतियां, समाधान का प्रारूप था जनगणना का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सोहागपुर। जनगणना कार्य के सफल एवं प्रभावी संचालन में डाटा संकलन फील्ड की चुनौतियां समाधान के प्रारूप के प्रथम बैच का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सेंट पैट्रिक स्कूल परिसर में आयोजित कार्यक्रम तहसीलदार एवं चार्ज जनगणना अधिकारी रामकिशोर झड़बड़े के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर तहसीलदार आर एस झरबड़े ने बताया कि इस जनगणना प्रशिक्षण का तीन दिवसीय प्रशिक्षण के प्रथम बैच में 21 सुपरवाइजरों एवं 125 प्रगणकों ने भाग लेकर आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के अवसर पर प्रतिभागियों को जनगणना कार्य की प्रक्रिया, मोबाइल ऐप के माध्यम से डाटा संकलन, जनगणना संबंधी नियम एवं फील्ड में आने वाली संभावित चुनौतियों के समाधान के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में फील्ड ट्रेनर के राकेश रघुवंशी, रामकिशोर दुबे, जितेंद्र तिवारी, राहुल तिवारी, विपिन गिल्ला एवं विजेंद्र वर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर जनगणना में आने वाली समस्याओं पर सारगर्भित उद्बोधन देकर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।इसके अलावा जनगणना टीम के अमितकुमार मिश्रा, संदीप कुशवाहा, उमेश रघुवंशी एवं अविनाश डोंगरे ने उल्लेखनीय सहयोग दिया। इसी क्रम में प्रशिक्षण के अवसर पर प्रतिभागियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से फील्ड विजिट भी कराई गई। जिससे उनको वास्तविक परिस्थितियों में जनगणना करने की विकसित समझ हो सके। इसी अवसर पर तहसीलदार आर एस झरबड़े ने सभी प्रतिभागियों को सेवा भाव प्रतिज्ञा की शपथ दिलाई। जिसमें प्रत्येक नागरिक की जानकारी को गोपनीय रखने, जनगणना कार्य को ईमानदारी, निष्ठा एवं पूर्ण जिम्मेदारी के साथ संपन्न करने का संकल्प लिया गया।प्रशासन ने आशा व्यक्त की है कि प्रशिक्षित कार्मिक जनगणना कार्य को पूरी जिम्मेदारी एवं निष्ठा के साथ संपन्न कराएंगे।

मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर प्रभारी कलेक्टर और एसपी ने ग्राम सिरसोदिया में लिया व्यवस्थाओं का जायजा

धार। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के 19 अप्रैल को धार जिले के ग्राम सिरसोदिया (तहसील धरमपुरी) में प्रस्तावित 'मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना' कार्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुए जिला प्रशासन ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। इसी कड़ी में प्रभारी कलेक्टर एवं सीईओ जिला पंचायत अभिषेक चौधरी तथा पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी ने आज ग्राम सिरसोदिया पहुँचकर हेलीपैड स्थल, मंच और कार्यक्रम स्थल का विस्तृत निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने सुरक्षा के कड़े इंतजामों की समीक्षा की। प्रभारी कलेक्टर श्री चौधरी ने हेलीपैड और सभा स्थल पर बेरिकेडिंग, अग्निशमन यंत्रों (फायर फाइटर) की उपलब्धता और सफाई व्यवस्था के संबंध में संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने सुरक्षा घेरे और वीआईपी प्रोटोकॉल के पालन हेतु पुलिस बल की तैनाती का जायजा लिया।

सिरसोदिया में आयोजित होने वाले विशाल कन्या विवाह कार्यक्रम के लिए बनाई गई वेदियों, हवन कुण्डों और पाण्डाल का भी अवलोकन किया गया। प्रभारी कलेक्टर ने निर्देश दिए कि विवाह जोड़ों और उनके परिजनों के लिए भोजन, पेयजल और बैठने की उत्तम व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। हेलीपैड पर बेरिकेडिंग और सुरक्षा प्रमाणपत्र सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। संपूर्ण कार्यक्रम स्थल पर 24 घंटे निर्बाध विद्युत आपूर्ति और जनरेटर बैकअप की व्यवस्था अधीक्षक यंत्री द्वारा की जाएगी।

मुख्यमंत्री के भ्रमण के दौरान हेलीपैड और सभा स्थल पर आवश्यक दवाओं और जीवन रक्षक उपकरणों सहित एम्बुलेंस व मेडिकल टीम तैनात रहेगी। निरीक्षण के दौरान अन्य प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। अधिकारियों ने निर्देशित किया कि सभी व्यवस्थाएं कार्यक्रम शुरू होने से पूर्व पूर्ण कर ली जाएं ताकि आयोजन गरिमापूर्ण और सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न हो सके।

एक बार फिर राज्य मार्ग रानी पिपरिया के मोड़ पर भतीजी की लगुन ले जाते समय ट्रक की टक्कर से मौत

सोहागपुर। सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय के आसपास बने राज्य मार्ग पिपरिया नर्मदापुरम के रास्ते लांगाबम्होरी, करनपुर,रानी पिपरिया आदि में बने ब्लैक स्पाटों को तत्कालीन कलेक्टर सोनिया मीना ने लोक निर्माण विभाग को प्राथमिकता के रूप में हटाकर नागरिकों को राहत देने के निर्देश दिए थे। लेकिन लोक निर्माण विभाग केज़िले में अधिकारियों ने उसे धरातल पर नहीं उतारा । इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि जिला मुख्यालय पर कैसे कैसे अधिकारी कुर्सियों पर विराजमान हैं। क्योंकि वरिष्ठ अधिकारी तो चाहते है कि जनता-जनार्दन को राहत मिले। अब देखना होगा कि नवागंतुक कलेक्टर सोमेश मिश्रा नर्मदापुरम पिपरिया मार्ग के बिलेक स्पाटों को हटाने के कारगर कदम उठाएंगे। उल्लेखनीय है सोहागपुर के समीपवर्ती ग्राम लांगाबम्होरी के 90 कोण के अंधे मोड़ पर अक्सर दुर्घटनाएं होती रही है। वहीं करीबन 15 बीस साल पूर्व एक बस दुर्घटनाग्रत हो गई थी। जिसमें करीबन बीस बस यात्री काल कवलित हो गए थे।उस समय जनप्रतिनिधियों ने जनता को आश्वस्त किया था कि शीघ्र ही इस अंधे मोड़ को ठीक करा दिया जाएगा। लेकिन जनता-जनार्दन इस रास्ते के मोड़ को ठीक कराने की राह देख रही है।हाल की घटना में सोहागपुर पुलिस थाने में सूचनाकर्ता राजकुमार पिता रमेश कीर निवासी तमचरू थाना माखननगर ने इस आशय की सूचना दी कि वह क्षेत्रीय बैंक की गाड़ी चलाता है ।

पुणे में एयरफोर्स के विमान की हार्ड लैंडिंग

करीब 11 घंटे बंद रहा रनवे, 91 फ्लाइट्स कैंसिल

पुणे (एजेंसी)। पुणे इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर शुक्रवार रात भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान की हार्ड लैंडिंग हुई। रात 10.30 बजे हुई इस घटना के बाद रनवे को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया था। जिसके कारण एयरपोर्ट पर फ्लाइट ऑपरेशन करीब 11 घंटे तक प्रभावित रहा। पुणे एयरपोर्ट के डायरेक्टर संतोष धोके ने बताया कि आईएएफ के विमान को सुबह करीब 5.45 बजे रनवे से हटा दिया गया था। लेकिन नोटम का टाइम बढ़ाकर सुबह 9 बजे कर दिया गया था। हालांकि फ्लाइट ऑपरेशन सुबह 7.30 बजे के बाद नॉर्मल हो सका। आईएएफ ने एक्स पर बताया कि दोनों पायलट सुरक्षित हैं। रनवे की मरम्मत के बाद उसे फ्लाइट्स के लिए फिट घोषित कर दिया गया। दिन भर में ऑपरेशन सामान्य हो जाएगा। एयरपोर्ट डायरेक्टर के मुताबिक रनवे बंद रहने के दौरान 5 एयरलाइंस की 91 फ्लाइट्स कैंसिल करनी पड़ी थीं। जबकि 12 फ्लाइट्स को डाइवर्ट कर दिया गया। इनमें इंडिगो की 65, एअर इंडिया की 6, स्पाइसजेट की 5, अकासा एयर की 5 फ्लाइट्स शामिल थीं।

बीजेपी आएगी तो बंगाल में लव जिहाद बंद होगा

सीएम योगी ने कहा-ममता दीदी सिंहासन खाली करो

कोलकाता (एजेंसी)। सीएम योगी ने शनिवार को पश्चिम बंगाल में 2 रैलियां कीं। पहली रैली में उन्होंने कहा- हम ममता दीदी से कहने आए हैं कि सिंहासन खाली करो, भाजपा आने वाली है। भाजपा की डबल इंजन सरकार आने पर यहां लव जिहाद और लैंड जिहाद बंद होगा। टीएमसी पर आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा- उसके नेता घुसपैठियों की पैरोकारी करते हैं। सीएम योगी ने कहा-विपक्ष बेटियों को उनका हक नहीं देना चाहता। कल संसद में देश ने सब देखा। जब पीएम मोदी ने बहन-बेटियों के लिए लोकसभा में 33 फीसदी आरक्षण को 2029 से लागू करने संबंधी संशोधन बिल पेश किया, तो कांग्रेस, सपा और वामपंथी दलों ने उसे पास नहीं होने दिया। यह आधी आबादी का अपमान है। उनके हक पर डाका

डालने जैसा है। बहनें इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगी। उन्होंने कहा- टीएमसी 'मां, मानुष और माटी' की बात करती थी, लेकिन संसद में सबने देखा कि 'मां' यानी महिलाओं के आरक्षण पर उनका क्या रुख रहा।

पीएम मोदी ने बंगाल के श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों को पूरा किया

योगी ने कहा कि बंगाल की धरती का तेज है... याद कीजिए बंकिम चंद चट्टोपध्याय ने वंदेमातरम का मंत्र दिया था। गुरुदेव रविंद्रनाथ ठाकुर ने राष्ट्रगान दिया। गुरु रविंद्र नाथ टैगोर को पहला साहित्य का पुरस्कार मिला। नेताजी सुभाष चंद बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानी दिए। खुदीराम बोस इसी बंगाल की धरती की देन है। याद कीजिए- यही बंगाल है, जिसने श्यामा प्रसाद मुखर्जी को जन्म दिया।

गोरखनाथ मंदिर से यहां का विशेष नाता

योगी ने कहा कि बंगाल की धरती ने रामकृष्ण परमहंस जैसा संन्यासी दिया। स्वामी प्रणवानंद की शिक्षा गोरखपुर मठ में 114 वर्ष पहले हुई थी। बंगाल की धरती से ये हमारा रिश्ता है। मैं इस पावन धरा को जिसने भारत की आजादी के लिए और स्वतंत्र भारत में देश की रक्षा करने के लिए हमेशा अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर बलिदान की नई परंपरा दी है। ऐसी धरती को मैं नमन करता हूं। यह भूमि भारत की आस्था, लोककला, संस्कृति, लोकगीत, वीरों के शौर्य और परिश्रमी किसानों की पहचान है। कूच बिहार ने देश में अपनी अलग पहचान बनाई है। माथाभांगा उसकी विशेष पहचान का केंद्र है। ठाकुर पंचानन वर्मा, वीर चिला राय, गीता राय बर्मन की ये पावन धरा है। कौन ऐसा भारतीय होगा जो नमन न करना चाहता होगा।

भारतीय सांस्कृतिक एकता का परिचय- जगदगुरू आदि श्री शंकराचार्य जी हैं

भोपाल। मातृभाषा मंच के द्वारा आदि शंकराचार्य पर केंद्रित प्रबोधन कार्यक्रम श्री नारायण गुरु मंदिर, सुभाष नगर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मातृभाषा मंच के अध्यक्ष श्री संतोष कुमार राउत एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संघचालक सोमकांत उमालकर विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अद्वैत वेदांत के मर्मज्ञ उमाशंकर पचौरी थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में मातृभाषा मंच के संयोजक अमिताभ सक्सेना ने मातृभाषा मंच का परिचय देते हुए कहा कि विगत 8 वर्षों से मातृभाषा मंच भोपाल नगर के विभिन्न भाषायी परिवारों में मातृभाषा की स्वीकार्यता को बढ़ाने में प्रयासरत हैं। सक्सेना ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताते हुए कहा कि आदि शंकराचार्य जी की जयंती हमें एक अवसर देती है कि हम उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण करें।

मुख्य वक्ता के रूप में उमाशंकर पचौरी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में आदि शंकराचार्य को स्मरण करते हुए कहा कि; आदि शंकराचार्य ने 'अहं ब्रह्मास्मि' का सूत्र दिया। 'अहं ब्रह्मास्मि' का अर्थ है मैं ब्रह्म हूँ। यह बृहदारण्यक उपनिषद

(यजुर्वेद) का एक महावाक्य है जो अद्वैत वेदांत के अनुसार व्यक्ति की आत्मा और परमेश्वर (ब्रह्म) के एक होने का बोध कराता है। इसका अर्थ यह है कि हम शरीर नहीं, बल्कि शाश्वत, अमर और दिव्य आत्मा हैं।

अपने उद्बोधन में पचौरी ने आदि शंकराचार्य के कृतित्व की व्याख्या करते हुये कहा कि; आदि शंकराचार्य (8वीं शताब्दी) का भारतीय संस्कृति, दर्शन और सनातन धर्म के पुनरुत्थान में अतुलनीय योगदान है। उन्होंने अद्वैत वेदांत (ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या) का प्रतिपादन किया, भारत के चारों कोनों में 4 मठ स्थापित किए, उन्होंने उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता (प्रस्थानत्रयी) पर महत्वपूर्ण भाष्य लिखेद्य सिर्फ 32 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने जितना किया, वह सदैव ही याद रखा जाएगा। आदि गुरु शंकराचार्य जी ने भारत की एकता और सांस्कृतिक अखंडता को बनाए रखने के लिए चारों दिशाओं में चार मुख्य मठों की स्थापना की।

उमाशंकर जी ने कहा कि आदि शंकराचार्य जी ने मंदिरों में पूजा-पद्धति और पुजारियों के लिए अनेकों परम्परायें निर्धारित की, जिनके अनुसार, उत्तर भारत के बद्रीनाथ में दक्षिण भारत के नंबूदिरी ब्राह्मणों को पुजारी के रूप में नियुक्त किया।

आखिरी में मातृभाषा मंच के अध्यक्ष पूर्व पुलिस महानिदेशक राउत ने धन्यवाद दिया।

पुलिस ने वाटर कैनन चलाई, सांसद-केंद्रीय मंत्री हिरासत में

राहुल के घर तक महिला सांसदों का मार्च, जलाया पुतला

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक पारित न होने को लेकर एनडीए नेता देशभर में प्रदर्शन कर रहे हैं। दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने महिला कार्यकर्ताओं के साथ राहुल गांधी के घर की ओर मार्च किया। कार्यकार्ताओं ने राहुल का पुतला जलाया। पुलिस ने भीड़ हटाने के लिए वाटर कैनन चलाई। केंद्रीय राज्य मंत्री रक्षा खडसे और भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज को हिरासत में लिया गया है। दरअसल सरकार शुक्रवार को लोकसभा में संविधान का 131वां संशोधन बिल लाई थी। सरकार इसे पास नहीं करा पाई। यह 54 वोट से गिर गया। इसके जरिए संसद की 543 सीटें बढ़ाकर 850 करने का प्रावधान था। भाजपा सांसद

मनोज तिवारी ने कहा- मेरा मन बहुत रो रहा है। कल जब संसद में बिल पास नहीं हो पाया तो आपने पीएम मोदी का चेहरा देखा होगा कि उन्होंने अपने दर्द और आंसुओं को कैसे काबू में रखा। मेरा तो उठने का भी मन नहीं कर रहा था।

माता-पिता के संस्कार और गुरूओं से प्राप्त ज्ञान के प्रति सदैव रहें कृतज्ञ : राज्यपाल पटेल

राज्यपाल प्लेसमेंट ऑफर वितरण समारोह में हुए शामिल, विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों को प्रदान किए सर्टिफिकेट

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि विद्यार्थी, सफलता के बाद अपने माता-पिता के त्याग, बलिदान और समर्पण को कभी नहीं भूले। उनका आजीवन सम्मान करें। वृद्धावस्था में उनकी विशेष देख-भाल करें। माता-पिता के संस्कारों और गुरूओं से मिले ज्ञान के प्रति सदैव कृतज्ञता का भाव रखें। उन्होंने कहा कि जीवन में हमेशा ईमानदारी, परिश्रम और निष्ठा का पालन करें। गरीब, वंचित और जरूरतमंदों के कल्याण का भाव हमेशा मन में रखे, जब भी अवसर मिले उनकी जरूर मदद करें।

राज्यपाल श्री पटेल शुक्रवार को बंसल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स भोपाल के प्लेसमेंट ऑफर वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने रोजगार प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थी, उनके गुरूजन और अभिभावकों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। राज्यपाल श्री पटेल ने समारोह में विद्यार्थियों को इंजीनियरिंग, फार्मेसी सहित अलग-अलग क्षेत्रों की निजी कंपनियों के प्लेसमेंट ऑफर सर्टिफिकेट भी प्रदान किए।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने विद्यार्थियों से कहा कि आज का दिन, आपकी सफलता पर गर्व करने का दिन है। यह उपलब्धि आपके कठिन परिश्रम, शिक्षकों के निरंतर मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। यह संकल्प, समर्पण और सफलता का उत्सव है। उन्होंने कहा कि जहां एक ओर यह आपके जीवन की उपलब्धि का विशेष क्षण है, वहीं नई जिम्मेदारियों की शुरुआत भी है। यह भी याद रखें कि सफलता, केवल उच्च पद अथवा वेतन से नहीं मापी जा सकती है। वास्तविक सफलता तब मानी जाती है जब आप अपने बौद्धिक और नैतिक मूल्यों से समाज तथा राष्ट्र के निर्माण एवं मानवता के कल्याण में सहभागी होते हैं।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके विजनरी नेतृत्व में नई शिक्षा नीति, स्टार्ट अप इंडिया, स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रम, युवाओं को सशक्त बनाने की अभूतपूर्व पहल है। उन्होंने कहा कि युवा इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएँ। अपने ज्ञान, कौशल और प्रतिभा से राष्ट्र के नव निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाएँ। तेजी से बदलती तकनीकों और नवाचारों के युग में केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहें बल्कि नई संभावनाओं और चुनौतियों के लिए खुद को लगातार तैयार करें। राज्यपाल श्री पटेल ने युवाओं से समाज के कमजोर वर्ग की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहने और समाधान में सक्रिय सहयोग की अपील की। राज्यपाल श्री पटेल का कार्यक्रम में बंसल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स के सचिव श्री सुनील बंसल ने पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। स्वागत उद्बोधन ग्रुप के एम.डी. श्री पार्थ बंसल ने दिया। सह सचिव डॉ.संजय जैन ने आभार माना। समारोह में डायरेक्टर डॉ.दामोदर तिवारी और डॉ. सतीश नायक, संस्थान के विभिन्न संकायों के प्राध्यापक, विद्यार्थी और उनके परिजन उपस्थित थे।

प्रदेश के शिक्षकों का भोपाल में प्रदर्शन, ज्ञापन सौंपा

टीईटी अनिवार्यता के खिलाफ जुटे ; मांग पूरी नहीं होने पर जून में बड़े आंदोलन की चेतावनी दी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शनिवार को अध्यापक शिक्षक संयुक्त मोर्चा के आह्वान पर बड़ा शिक्षकों ने बड़ा प्रदर्शन किया। शिक्षकों ने एमपी नगर एसडीएम को ज्ञापन सौंप कर प्रदर्शन को समाप्त किया। आयोजकों के मुताबिक, भोपाल के भेल स्थित दशहरा मैदान में 'मुख्यमंत्री अनुरोध यात्रा' के तहत प्रदेश के अलग अलग जिलों से करीब 50 हजार से ज्यादा शिक्षकों ने भाग लिया। अध्यापक संघ के अध्यक्ष भरत पटेल ने चेतावनी दी कि अगर मांगें पूरी नहीं हुई तो जून में फिर बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

सरकार परीक्षा ले तो पढ़ाई का समय दे, जनगणना में न लगाए- संयुक्त मोर्चे के संयोजक जगदीश यादव ने कहा कि अगर सरकार परीक्षा लेना ही चाहती है तो शिक्षकों को पढ़ाई के लिए समय दिया जाए और उन्हें जनगणना जैसे कामों में न लगाया जाए। संयुक्त मोर्चा के पदाधिकारियों ने साफ कहा कि पहले से नौकरी कर रहे शिक्षकों को दोबारा शिक्षक पात्रता परीक्षा यानी टीईटी देने के लिए मजबूर करना गलत है। उनका कहना है कि नियुक्ति के समय सभी जरूरी योग्यता पूरी की गई थी, ऐसे में 20 से 25 साल की सेवा के बाद नई शर्तें थोपना न्यायसंगत नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट आदेश से 90 से 95 प्रतिशत शिक्षक प्रभावित हुए- शिक्षकों का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश से 90 से 95 प्रतिशत तक शिक्षक प्रभावित हुए हैं। खासकर वे शिक्षक जो पहले अध्यापक थे और बाद में शिक्षक संवर्ग में शामिल हुए। इन शिक्षकों ने कम वेतन से नौकरी शुरू की थी और आज भी पेंशन, ग्रेच्युटी और सेवा अवधि की गणना जैसे अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

मूल तारीख से सेवा की गणना नहीं कर रही सरकार- संयुक्त मोर्चा ने यह भी आरोप लगाया कि सरकार नियुक्ति की मूल तारीख से सेवा की गणना नहीं कर रही है जिससे आर्थिक नुकसान हो रहा है। अब टीईटीको अनिवार्य करने से उन पर और दबाव बढ़ रहा है और आगे चलकर कम पेंशन और ग्रेच्युटी मिलने का डर भी बना हुआ है।

भारी भीड़ के कारण पेड़ों के नीचे बैठे शिक्षक

दशहरा मैदान में भारी भीड़ के कारण पंडाल छोटा पड़ गया और कई शिक्षकों को पेड़ों की छांव में बैठना पड़ा। दूर दूर से आए प्रदर्शनकारियों को पुलिस बैरिकेडिंग की वजह से अपने वाहन काफी पहले ही रोकने पड़े और वहां से पैदल ही मैदान तक पहुंचना पड़ा। गौरतलब है कि इससे पहले 8 अप्रैल को जिला स्तर पर और 11 अप्रैल को ब्लॉक स्तर पर भी प्रदर्शन किए गए थे। उसी कड़ी में यह राज्य स्तरीय प्रदर्शन भोपाल में किया गया। आखिर में शिक्षकों ने एमपी नगर एसडीएम एल.के खरे को ज्ञापन सौंपा और अपनी मांगों पर जल्द फैसला लेने की अपील की। इसके साथ ही दिन भर चला यह बड़ा प्रदर्शन शांतिपूर्ण तरीके से समाप्त हो गया।

मुख्यमंत्री आज ओरछा-चंदेरी के लिये 'पीएमश्री हेली पर्यटन सेवा' का करेंगे शुभारंभ

भोपाल अब हवाई मार्ग से जुड़ेगा ओरछा और चंदेरी से

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश में पर्यटन और धार्मिक यात्राओं को सुगम, सुरक्षित और आनंददायक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए रविवार, 19 अप्रैल को सुबह 9:30 बजे, राजधानी के स्टेट हैंगर से 'पीएमश्री हेली पर्यटन सेवा' के अंतर्गत नए सेक्टर (भोपाल-चंदेरी-ओरछा) का विधिवत शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस अवसर पर हेलीकॉप्टर को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे और यात्रियों को बोर्डिंग पास भी प्रदान करेंगे।

महात्मा फुले शताब्दी समिति में साहित्यकार नीरजा माधव मनोनीत

भोपाल। राष्ट्रपति द्वारा सर्वोच्च महिला नागरिक सम्मान नारी शक्ति पुरस्कार 2021 से सम्मानित एवं जानी-मानी साहित्यकार डॉ. नीरजा माधव प्रधानमंत्री के चेयरमैनशिप के अंतर्गत बनी उच्च स्तरीय समिति की सदस्य बनाई गई हैं। यह समिति महात्मा ज्योतिबा फुले की दो सौवीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में दो वर्षीय राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु बनाई गई है।यह सूचना नीरजा माधव को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली, के संयुक्त सचिव की ओर से प्राप्त हुई है। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी साहित्यिक पहचान बना चुकीं नीरजा के उपन्यास और कहानियां विभिन्न विश्वविद्यालयों और राज्य बोर्ड के पाठ्यक्रमों में शामिल किए गए हैं। डॉ. नीरजा माधव के साहित्य पर देशभर के विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हुए हैं और हो रहे हैं।

अक्षय तृतीया पर बाल विवाह रोकने राज्य सरकार ने उठाये कदम

विशेषज्ञों ने संबद्ध अधिकारियों को दिया ऑनलाइन प्रशिक्षण

भोपाल (नप्र)। आगामी अक्षय तृतीया 20 अप्रैल के अवसर पर होने वाले बाल विवाहों की संभावनाओं को पूरी तरह से रोकने के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग पूरी तरह सक्रिय हो गया है। विभाग द्वारा बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये प्रदेश भर के नामित बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारियों के लिए एक दिवसीय विशेष ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम, शुक्रवार को संचालनालय महिला बाल विकास भोपाल में हुआ। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जमीनी स्तर पर निगरानी तंत्र को सुदृढ़ करना और सूचना मिलते ही वैधानिक प्रक्रियाओं को गति देना है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की किशोर न्याय समिति के वरिष्ठ सलाहकार एवं अधिवक्ता श्री गुरमुख सिंह लाम्बा तथा यूनिसेफ, मध्यप्रदेश के बाल संरक्षण अधिकारी श्री गोविंद बेनीवाल उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञों ने बाल विवाह प्रतिषेध कानून की बारीकियों पर प्रकाश डालते हुए अधिकारियों को संविधान प्रदत्त उनकी शक्तियों और कर्तव्यों का बोध कराया। वरिष्ठ सलाहकार श्री लाम्बा ने कानूनी प्रावधानों के तहत त्वरित कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया, वहीं श्री बेनीवाल ने सामाजिक दृष्टिकोण और प्रशासनिक तालमेल के महत्व को रेखांकित किया।

प्रशिक्षण के दौरान अधिकारियों को विस्तृत रूप से बताया गया कि बाल विवाह की सूचना प्राप्त होते ही किस प्रकार निषेधाज्ञा जारी करवाई जाए और यदि विवाह संपन्न हो चुका हो, तो उसे शून्य घोषित कराने की विधिक प्रक्रिया क्या होनी चाहिए। विशेषज्ञों ने पुलिस और जिला प्रशासन के साथ मिलकर की जाने वाली त्वरित कार्रवाइयों और जिला मजिस्ट्रेट द्वारा की जाने वाली विभिन्न वैधानिक प्रक्रियाओं के बारे में भी ओरिएंटेशन किया।

प्रशिक्षण में अधिकारियों ने फील्ड में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों और चुनौतियों को साझा किया, जिनका विशेषज्ञों ने समाधान करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया। विभाग ने स्पष्ट किया है कि अक्षय तृतीया के दौरान निगरानी तंत्र को अत्यंत संवेदनशील और सक्रिय रखा जाएगा जिससे किसी भी मासूम का भविष्य असुरक्षित न हो। इस महत्वपूर्ण ऑनलाइन प्रशिक्षण में विभाग के राज्य और जिला कार्यालयों के तमाम वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे, जिन्होंने सामूहिक रूप से प्रदेश को बाल विवाह मुक्त बनाने का संकल्प दोहराया।

तालाब में नहाते समय चार किशोरियां डूबीं, दो की मौत

2 को ग्रामीणों ने बचाया, एक नाबालिग को बचाते समय हुआ हादसा

मैहर (नप्र)। मैहर के कोतवाली थाना क्षेत्र के पटेहरा तालाब में तालाब में नहाने गई तीन नाबालिग किशोरियां और 1 युवती गहरे पानी में डूब गईं। घटना शनिवार सुबह की है। हादसे में दो किशोरियों की मौत हो गई है, जबकि दो अन्य को स्थानीय लोगों ने बचा लिया।

तालाब में नहाने गई थी- पटेहरा बीड़ी कॉलोनी की एक युवती और तीन नाबालिग तालाब में नहाने गई थीं। नहाते समय एक किशोरी का पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चली गई। उसे बचाने के प्रयास में अन्य तीनों भी आगे बढ़ीं, जिससे वे सभी गहरे पानी में डूबने लगीं। मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए दो बच्चियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

हादसे में 2 की मौत, 2 को ग्रामीणों ने बचाया- मृतकों की पहचान पूनम चौधरी (10 साल), पिता मुकेश चौधरी और आंचल चौधरी (20), पिता रामसजीवन चौधरी, निवासी बीड़ी कॉलोनी पटेहरा के रूप में हुई है। बचाव दल ने दोनों शवों को तालाब से बाहर निकाल लिया है। शवों को सिविल अस्पताल मैहर भेजा गया है। घटना की सूचना मिलते ही एसडीएम दिव्या पटेल, तहसीलदार जितेंद्र पटेल और थाना प्रभारी महेंद्र सिंह चौहान मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

रतलाम के मथुरी तालाब में मिले दो शव

पुलिस व गोताखोर टीम मौके पर ; करमदी गांव के ग्रामीणों ने देखे थे

रतलाम (नप्र)। रतलाम जिले के करमदी ग्राम पंचायत अंतर्गत मथुरी तालाब में शनिवार दोपहर करीब 1:30 बजे दो अज्ञात व्यक्तियों के शव पानी में तैरते मिले। शव दिखते ही ग्रामीणों में हड़कंप मच गया और बड़ी संख्या में लोग मौके पर एकत्रित हो गए।

स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद माणकचौक थाना प्रभारी पातीराम डावरे पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करते हुए जांच शुरू कर दी है।

शव निकालने के लिए बुलाए गए गोताखोर- तालाब से शवों को बाहर निकालने के लिए गोताखोरों को बुलाया गया है। पुलिस टीम ने आसपास के क्षेत्र में भी जानकारी जुटाना शुरू कर दिया है ताकि मृतकों की पहचान की जा सके।

घटना की गंभीरता को देखते हुए एफएसएल (फॉरेंसिक) टीम को भी मौके पर बुलाया जा रहा है, जो साक्ष्य जुटाकर जांच में मदद करेगी। पुलिस ने पूरे इलाके को घेराबंदी में ले लिया है।

पुलिस ने बताया-उम्र 30 से 32 वर्ष के बीच- माणकचौक थाना प्रभारी पातीराम डावरे के अनुसार, तालाब से मिले दोनों शव पुरुषों के हैं जिनकी अनुमानित उम्र 30 से 32 वर्ष के बीच है।

नर्मदापुरम् में नहर ओवरफ्लो, 40 एकड़ खेत तालाब में तब्दील

10 से ज्यादा किसानों की मूंग बर्बाद, एसडीओ ने मानी मॉनिटरिंग में गलती

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम जिले के माखननगर तहसील स्थित शुक्करवाड़ा कलां क्षेत्र में तवा नहर में ओवरफ्लो पानी छोड़ने से करीब 40 एकड़ खेत तालाब में तब्दील हो गए हैं। खेतों में पानी भरने से 10 से ज्यादा किसानों की मूंग की फसल खराब हो गई है।

यह स्थिति शुक्रवार रात नहर विभाग के अफसरों की गलत मॉनिटरिंग के कारण बनी। वर्तमान में किसानों की शिकायत के बाद नहर विभाग के अधिकारी केवल पानी का फ्लो कम करवाने की बात कह रहे हैं। किसानों का कहना है कि पानी बंद नहीं हुआ तो यह दूसरे खेतों तक फैलेगा, जिससे अन्य किसानों की फसल खराब होने की संभावना है।

रात भर आश्वासन देते रहे अफसर, सुबह तक डूब गए खेत- किसान अनिल गौर ने बताया, शुक्रवार रात से ही नहर में पानी ओवरफ्लो होकर खेतों में भराने लगा था। जिसकी जानकारी सब इंजीनियर, एसडीओ और ईई को दी। पर सभी ने आश्वासन दिया कि पानी बंद करवा रहे है, पर सुबह तक 30-35 एकड़ क्षेत्र के खेतों में पानी भरा गया। जिससे मूंग फसल खराब हो गई। किसानों का कहना है कि महंगी फसल बर्बाद होने से उनकी चिंता बढ़ गई है और नहर विभाग के अफसर किसानों के नुकसान व अपनी लापरवाही को नजरअंदाज कर रहे हैं।

इस जलभराव से किसान पार्वती बाई मोहनलाल, संतोष रमेश, शिशुपाल, दरयाव सिंह, सरस्वती रमेश, शैलेंद्र गौर, जुगल किशोर गौर, विष्णु पन्नालाल, ऋषि, चुनटी लाल, रविंद्र मुकुंद सिंह, अनिल गौर, रामकुमार, विजय शंकर गौर और अनिल कुमार लालताप्रसाद गौर समेत अन्य किसानों के खेतों में पानी घुस गया है। किसानों ने बताया कि तवा नहर विभाग द्वारा ओवरफ्लो पानी छोड़ने की वजह से पिछले साल गेहूं की फसलें भी बर्बाद हुई थीं, तब भी विभाग द्वारा किसी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई थी।

ईई ने सवाल सुनकर काटा कॉल, एसडीओ बोले- मॉनिटरिंग में हुई गलती- खेतों में पानी भराने के संबंध में जब तवा नहर विभाग की ईई प्रतिभा सिंह को कॉल किया गया, तो उन्होंने कहा कि पानी ओवरफ्लो होने से यह स्थिति बनी है और हम फ्लो कम करवा रहे हैं। जब उनसे पूछा गया कि ओवरफ्लो पानी कैसे छोड़ा गया, तो इसका जवाब देने के बजाय उन्होंने कॉल कट कर दिया।

वहीं, एसडीओ पीएन दायमा ने कहा, सेमरी हरचंद तरह से अधिक पानी छोड़ने की वजह से पानी ओवर फ्लो हुआ। उन्होंने स्वीकारा कि सेमरी हरचंद तरफ के अफसर और कर्मचारियों की गलत मॉनिटरिंग की वजह से पानी अधिक आया है। उन्होंने बताया कि रात से ही पानी कम करवा दिया है और आज (शनिवार) दोपहर तक स्थिति ठीक हो जाएगी।

10 से ज्यादा बार चाकुओं से गोदकर ठेकेदार की हत्या

पेट से बाहर आ गई आंतें, 5 दिन पहले जेल से छूटे 5 बदमाशों ने की वारदात, एक गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में पुताई ठेकेदार की चाकू-छुरी से दस से अधिक वार कर हत्या कर दी गई। वारदात पुरानी रंजिश में अंजाम दी गई। मृतक और आरोपी पहले दोस्त थे। युवक आरोपियों की गलत हरकतों और मोहल्ले में आतंक का विरोध करता था। इसी कारण उसने उनसे बात बंद कर दी थी। इसी से नाराज होकर बदमाशों ने हत्याकांड किया।

निखिल सितोले पुत्र सतीश सितोले (20) सर्वधर्म दामखेड़ा में शुक्रवार रात 9:30 बजे घर के बाहर खड़ा था, तभी आरोपी धनु, गोविंद, आशीष, जुगल और गन्नू आए और चाकू-छुरी से ताबड़तोड़ वार किए। इसके बाद आरोपी हथियार लहराते हुए फरार हो गए।

वारदात इलाके में वर्चस्व कायम करने के लिए की गई। आरोपी आए दिन इलाके में दहशत फैलाते हैं और मुंह खोलने वालों को बेरहमी से पीटते हैं।

आरोपियों के खिलाफ आवाज उठाता था युवक- निखिल उनकी हरकतों का खुलकर विरोध करता था। इसी बात पर बदमाशों ने शुक्रवार शाम उसे धमकाने का प्रयास किया। निखिल ने विरोध कर पुलिस में शिकायत की बात कही तो आरोपी उससे हाथ-मुक्कों से मारपीट कर फरार हो गए।

जाते समय आरोपियों ने उसे मोहल्ले में न दिखने और मुंह बंद रखने की धमकी दी थी। शुक्रवार रात निखिल घर के बाहर अकेला खड़ा था। जानकारी मिलते ही आरोपियों ने चाकू-छुरी से ताबड़तोड़ वार किए। परिजन उसे लहूलुहान हालत में अस्पताल ले गए, जहां इलाज के दौरान तड़के उसकी मौत हो गई। पुलिस ने हत्या का केस दर्ज किया है और आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।

बदमाश पुराने अपराधी हैं, हाल ही में जेल से छूटे थे

आरोपी जुगल, गोविंद और धनु इलाके के बदमाश हैं। वे हाल ही में हत्या के प्रयास के मामले में जेल से छूटे थे। निखिल उनके आतंक के खिलाफ पहले से आवाज उठाता रहा था।

पहले दोनों की दोस्ती थी, लेकिन उनकी हरकतों के कारण उसने दूरी बना ली थी। इसी कारण आरोपी उससे रंजिश रखते थे और विवाद के बाद उसे मौत के घाट उतार दिया।

इतने वार किए कि आंतें बाहर आ गईं- आरोपियों ने निखिल के पेट, पांव और हाथों पर ताबड़तोड़ वार किए। पेट में गहरे वार से उसकी आंतें बाहर आ गई थीं। परिजनों ने शर्ट से पेट बांधकर उसे अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

पिता बोले- औरतें छेड़ते हैं, वाहन फोड़ते हैं

मृतक के पिता सतीष शितोले ने बताया कि आरोपी पुराने बदमाश हैं। पुलिस उनका जुलूस निकाल चुकी है। वे पांच दिन पहले ही जेल से छूटे हैं। औरतों से छेड़छाड़ करते हैं। नशे में वाहनों को फोड़ देते हैं और लोगों से मारपीट करते हैं। कोई विरोध करे तो मेरे बेटे जैसा हाल कर देते हैं। मेरा बेटा काम करता था और परिवार का सहारा था। पुताई के ठेके लेकर अच्छी कमाई करता था।

वह आरोपियों से किसी तरह का संबंध नहीं रखना चाहता था और अपने काम से काम रखता था। बदमाशों की गलत हरकतों का विरोध करता था। यही उनसे बर्दाश्त नहीं हुआ और उन्होंने मेरे बेटे की जान ले ली।

टीआई संजय सोनी ने बताया कि आरोपी धनु को गिरफ्तार कर लिया गया है। अन्य आरोपियों की तलाश जारी है और जल्द सभी को गिरफ्तार किया जाएगा।

आत्मनिवेदन

संदीप राशिनकर

रेखाओं के वितान में स्मृतियों की गूंज

मेरी रेखाओं और उनसे सृजित रेखांकनों के वृहद वितान की अनगिनत स्मृतियों को संजोने और उसे लिपिबद्ध करने के मोह का परिणाम है मेरा ये आलेख। हालांकि साहित्यकार,मूर्तिकार और समाज में रचनात्मकता के संवर्धन को समर्पित रचनाकार पिता श्री वसंत और सतत रचनाशील और हस्तकला के विविध क्षेत्रों में दक्ष माताजी शरयु की संतान होने से मुझमें वंशानुगत कला के बीज मौजूद थे और सकारात्मक वातावरण के चलते वे उम्र के साथ परवानचढ़ते रहे। मुझे खुशी है कि मैं रेखांकन विधा में न सिर्फ निरंतर सृजनरत हूँ वरन इस विधा ने मुझे राष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष पहचान और देश विदेश में फैले असंख्य कला रसिकों का स्नेह पात्र बनाया है। मैं नहीं जानता कि रेखांकन विधा को मैं कितना दे पाया किन्तु यह निश्चित है कि रेखांकन विधा ने मुझे जो दिया उसका कर्ज में ताउम्र अदा नहीं कर सकता , मैं जीवनभर अपनी रेखाओं/रेखांकनों का कर्जदार बना रहना चाहता हूं। बात उन दिनों की है जब में खोर में विक्रम सीमेंट में सिविल इंजीनियर के पद पर कार्यरत होने से विक्रम नगर कॉलोनी में रहता था। हमारी श्रीमतियों के गरबा प्रैक्टिस में जाने से घर पर बैठे मैं और मेरे मित्र श्री हौसी चौरे की चर्चा में मेरी चित्रकला रुचि को देखते हुए उन्होंने कहा इस समय का उपयोग तुम चित्र बनाने में क्यों नहीं करते? उनकी इस प्रेरणा से बैठे-बैठे मैंने काली स्याही के पेन से कुछ रेखाओं को लेकर रेखांकन का सृजन किया, और मित्र के प्रोत्साहन से उन दिनों अपनी कल्पनाशीलता और सोच से कुछ रेखांकन बनाये। सन 1989 दिसम्बर में मेरी इंदौर यात्रा में अपने कुल जमा तीन नौसिखिये रेखांकनों के साथ मैं लोकप्रिय समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' के तत्कालीन संपादक आदरणीय डॉ. ओम नागपालजी से कह रहा था कि सर मैंने ये बनाये हैं। इनमें से आपको कोई प्रकाशन योग्य लगे तो रख लें, इस पर तपाक से उन्होंने कहा 'तीनों रख जाओ!' इस सकारात्मक प्रतिक्रिया से मुझे कितनी खुशी मिली यह कहने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे। इस घटना ने मुझे इतना प्रोत्साहित किया कि दैनिक भास्कर में उन दिनों छपे मेरे उन तीन रेखांकनों से शुरू हुई मेरी रेखांकन यात्रा देश भर की तमाम सभी प्रतिष्ठित पत्र - पत्रिकाओं में छपे हजारों रेखांकनों के साथ आज भी निरंतर जारी है।

सतत सृजन,साधना और नवाचार की प्रवृत्ति के चलते मुझे खुशी है कि रेखांकन विधा में न सिर्फ मैं अपनी विशिष्ट शैली बनाने में कामयाब रहा वरन मेरे रेखांकनों को देश विदेश के सभी स्तर के लोगों का अभूतपूर्व स्नेह प्राप्त हुआ। सारिका,धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, दिनमान,कादम्बिन, नवनीत, मनोरमा, वागर्थ, ज्ञानोदय, हंस, कथादेश, वर्तमान साहित्य, पाखी, संडे आब्जर्वर, कथन, संडे मेल, इंडिया टुडे, साहित्य अमृत, प्रेरणा, सरस्वती सुमन,पाठ,शब्द प्रवाह,समावर्तन,कला समय,वीणा,साक्षात्कार,आकंठ,अक्षरा,मधुमती, वातायन,पहल, कथाक्रम, समीरा,गगनांचल,इन्द्रप्रस्थ भारती, समकालीन भारतीय साहित्य, कथेसर, व्यंग्य यात्रा, मिळून सार्याजणी, श्रीसर्वोत्तम,हेमांगी,सबरंग,कथाबिम्ब, स्पंदन, सोच विचार,वनिता,उदंती, जैसी अनगिनत देश भर की पत्रिकाओं और जनसत्ता, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, नईदुनिया, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका,जागरण,लोकमत,चौथा संसार, स्वदेश, लोकमत समाचार,नव हिन्द टाइम्स, फ्री प्रेस,हेराल्ड,सकाळ, गोमंतक,पांचजन्य, तरुण भारत, मराठवाडा जैसे असंख्य समाचार पत्रों ने मेरे रेखांकनों को न सिर्फ प्रमुखता से प्रकाशित किया वरन मुझमें निहित कला सामर्थ्य को समृद्ध किया । मैं क्षमाप्रार्थी हूँ उन अनगिनत पत्र - पत्रिकाओं का जिनका स्थानाभाव के चलते मैं यहां चाहकर भी उल्लेख नहीं कर पाया जबकि आज रेखांकन विधा में मैं जहाँ हूँ उसमें उन सभी का महत्वपूर्ण योगदान है। मेरी रेखांकन क्षेत्र की तकरीबन तीन दशकों की यात्रा में काफी अनुभवों की बडी सी गठरी में से कुछ आपसे साझा करने का मोह संवरण नहीं कर पा रहा हूँ, तो लीजिये कुछ वाकये आपके लिए - स मेरे रेखांकनों पर लिखे एक आलेख का शीर्षक है 'रेखाओं का विस्तार समेटे है संसार'! और सचमुच इस रेखांकन यात्रा में मेरे रेखांकनों ने ऐसे- ऐसे विषयों को समेटा है जो आपको आश्चर्य में डाल सकते है! सन 1994 - 95 में औरंगाबाद में हुआ बोइंग क्रैश जिसमें वीडियोकॉन के मालिक श्री धूत सहित अनेकों उद्योगपतियों का विमान दुर्घटना में दुखद निधन हुआ था । उस घटना पर देवगिरि समाचार के संपादक अनिल सोनी द्वारा मुझे दुर्घटना स्थल पर भेजकर रेखांकन बनवाने का अनुभव काफी हृदय विदारक था। इन रेखांकनों का उपयोग देवगिरि समाचार और तरुण भारत ने विशेष तौर पर प्रकाशित श्रद्धांजलि विशेषांक के लिए किया था । उसी अवधि में लातूर में आये भीषण भूकंप पर केंद्रित विशेषांक में भूकंप केंद्रित रेखांकन भी एक ऐसा ही मार्मिक विषय था।

बारह वर्ष में एक बार उज्जैन में आयोजित होनेवाले सिंहस्थ से संबंधित मेरी अभिनव और चर्चित श्रृंखला का जन्म भी 'नवभारत' के तत्कालीन संपादक प्रमोद शंकर भट्ट के इस सुझाव से हुआ कि देश भर की पत्र पत्रिकाएं सिंहस्थ के फोटो ही छापेंगी, मैं चाहता हूं आप सिंहस्थ को आपके रेखांकनों में अभिव्यक्त करो। मुझे यह बताने में अद्भुत खुशी हो रही है कि भट्ट साहब ने नवभारत के सम्पूर्ण मुख पृष्ठ पर मेरी संक्षिप्त टिप्पणी के साथ मेरी सिंहस्थ श्रृंखला के रेखांकनों को प्रकाशित किया था। सदी के अंतिम सिंहस्थ को अलविदा कहते हुए भी उन्होंने अंत मे दो तिहाई पृष्ठ पर मेरे रेखांकनों को प्रकाशित किया था। साहित्य अमृत के प्रभातजी द्वारा विवेकानंद पर प्रकाशित वृहद विशेषांक के लिए मेरी शैली में विवेकानंद के कृतित्व और व्यक्तित्व पर आधारित रेखांकनों की श्रृंखला की अपेक्षा से मेरे द्वारा विवेकानंद पर एक विशिष्ट सृजन हो पाया। प्रभातजी की अपेक्षाओं और प्रेरणा के चलते साहित्य अमृत के अनेकों विविध विषयक विशेषांकों के लिए मेरे अनसोचे विषयों पर मेरी रेखांकन श्रृंखलाएं सृजित हुई है। इसके साथ ही उनके प्रभात प्रकाशन द्वारा नोबेल विजेता कैलाश सत्यार्थीजी की तीन पुस्तकों में मेरे रेखांकनों का प्रकाशन भी मैं मेरा सौभाग्य समझता हूं। भारत रत्न सत्यजीत राय की जादुई बाल कहानियों के लिए आवरण और रेखांकन बनाना भी एक विरल अनुभव रहा।

वरिष्ठ साहित्यकार और तत्कालीन दिल्ली दूरदर्शन के निदेशक श्री उद्भ्रांतजी की नेशनल द्वारा प्रकाशित महत्वपूर्ण कृति 'अनाद्यसूक्त' के लिए दिल्ली से फोन कर जब अपेक्षा की गई कि मेरी यह कृति सृष्टि निर्माण के पहले की परिस्थितियों पर है और मुझे लगता है कि इस अलहदा विषय के साथ आपके रेखांकन ही न्याय कर सकते है, तो उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए मुझसे एक और अलग विषय पर रेखांकन हुए। इन रेखांकनों को देखते हुए वरिष्ठ लेखक और विचारक अजातशत्रु की यह टिप्पणी मुझे खुशी देती है कि मात्र ये रेखांकन भी कलाक्षेत्र में आपकी सशक्त उपस्थिति सिद्ध करने के लिए काफी है।

दुबई के वरिष्ठ कवि स्व. गंगाधर जसवानी ने जब मुझे दुबई से उनके दो कविता संग्रहों 'देह दुबई दिल देश' और 'कह दियो हमरी अम्मा से के हम मरी गयो' की सभी कविताओं के लिए बाएं पृष्ठ पर रेखांकन बनाने के लिए कहा तो अनायास ही उनके जन्मस्थान उज्जैन से जुड़ी स्मृतियों और म्रत्यु के बाद की परिस्थितियों पर आधारित अलग विषयों पर बने रेखांकनों से मेरी कला समृद्ध हुई। बाद में राजकमल से प्रकाशित 'देह दुबई दिल देश' का विमोचन दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के हाथों हुआ था। निश्चित ही इतनी लंबी यात्रा में आये अनगिनत अच्छे, प्रेरणास्पद, प्रशंसात्मक अनुभवों के साथ कुछ खट्टे अनुभव भी स्वाभाविक है। एक ऐसा ही अनुभव याने इस यात्रा के शुरवाती दौर में कन्हैय्यालाल नंदन संपादित प्रतिष्ठित पत्रिका 'संडे मेल' में मेरे दो रेखांकनों को संयोजित कर किसी और के नाम से प्रकाशित किया जाना था । हालांकि रेखांकन प्रकाशन का शुरूआती दौर होने से न सिर्फ मैं इस गलती से बहुत आहत और विचलित हुआ वरन प्रबंधन द्वारा गलती न माने जाने से व्यथित भी हुआ । हालांकि कार्यवाहि करने के पत्र के चलते नंदनजी का आश्वासनात्मक पत्र पाकर संतुष्ट हुआ। गोआ के लोकप्रिय समाचार पत्र 'गोमंतक' के संपादक जयंत संभाजी ने एक दिन अनौपचारिक चर्चा में कहा कि गोआ में इन दिनों दो चीजों की अतिवृष्टि हो रही है, एक गोआ की बरसात और दूसरी तुम्हारे चित्र! यह बात उन्होंने इस संदर्भ में कही थी कि मेरे वहां मात्र छह महीने की अवधि में रहने के दौरान गोआ मीडिया ने मेरे न सिर्फ तीनसौ रेखांकन प्रकाशित किये थे वरन वहां के सारे अखबार मेरे रेखांकनों को प्रमुखता से प्रकाशित कर रहे थे। कला के साथ साथ मेरी साहित्यिक अभिरुचि और अंतर विधायी आवाजाही के चलते साहित्य की अधिकांश विधाओं के साथ मुझे न सिर्फ अपने रेखांकन बनाने के असीम अवसर मिले वरन ऐसी दर्जनों किताबें हैं जिनमें हर रचना के साथ बाएं पृष्ठ पर मेरे रेखांकन प्रकाशित हुए है ।

1994 में मेरी प्रथम गोवा यात्रा में मेरे मित्र सतीश नाईक ने जब किसी अपरिचित से मिलवाया तो वह कहने लगा कि संदीप राशिनकर मैं आपको अच्छी तरह से जानता हूं । मेरे बार- बार यह कहने पर कि मैं गोवा में पहली बार ही आया हूं पर भी वह बोलता रहा कि मैं आपको जानता हूं। इस पर मेरे यह पूछने पर कि भाई यहां थाने पर मेरी कोई तस्वीर चस्पां है क्या ? वह हंसकर बोला- संदीप राशिनकर आपके जनसत्ता सबरंग में छपे अनगिनत रेखांकन चुराकर मैं अपने अखबार में प्रकाशित करता रहा हूं । इसलिए मुझे संदीप राशिनकर अच्छे से परिचित है। घर से अठारह सौ किलोमीटर दूर पर कोई अजनबी आपकी कला की बदौलत आपको पहचानता है यह बात ही मुझे असीम खुशी देनेवाली थी ।

भारतीय ज्ञानपीठ के बंद पड़े हुए 'ज्ञानोदय' के प्रकाशन को जब 'नया ज्ञानोदय' नाम से फिर शुरू किया गया तो उसके प्रवेशांक के लिए डॉ.प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा स्नेहवश मेरे रेखांकनों को मंगवाना भी मेरी स्मृतियों का एक सुखद हिस्सा है। ऐसे ही बलरामजी के साहित्य अकादमी दिल्ली की पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के संपादक बनने के बाद उनके द्वारा भी स्नेहवश मुझसे रेखांकन मंगवाकर उन्हें एक लंबी अवधि तक निरंतर प्रकाशित करना भी मेरे लिए एक सुखद स्मृति है। मैं स्वयं को इसलिए भी भाग्यशाली मानता हूं कि देश भर की पत्र-पत्रिकाओं के सभी वरिष्ठ संपादकों का मेरे रेखांकनों पर भरपूर स्नेह रहा। सभी साहित्यकारों से लेकर सभी वर्ग के पाठकों ने भी मेरे रेखांकनों को असीम स्नेह दिया और दिल से सराहा इसके प्रमाण मुझे देश के सुदूर कोनों से आते हर आयुवर्ग के प्रेम से ओतप्रोत टेलीफोनों से मिलते हैं। हालांकि मेरी रचनायात्रा के विविध आयामों और कार्यों की इस लंबी यात्रा में आपसे कहने और साझा करने को बहुत कुछ है पर इस बार बस इतना ही! मेरी रचनात्मकता पर आप सबका स्नेह यूं ही बना रहे, क्योंकि यही मेरी सृजनशीलता का संबल है । **जय हो...**

कोई बात तो करो

कमलेश कुमार दीवान

क्या सोचती आवाम, कोई बात तो करो
कैसा हो ये निज़ाम, कोई बात तो करो।

चलते रहेंगे वाद और प्रतिवाद भी यहां
अच्छा हो इंतजाम,कोई बात तो करो।

इस वक्त यूं ऊंचा हुआ है नाम देश का
ये आंकड़ों का काम,कोई बात तो करो।

हासिल हुआ है क्या जंग से फ़साद से
माहौल क्यों तमाम,कोई बात तो करो।

सब ओर भाई चारा अमन चैन भी रहे
सबका ये इम्तिहान, कोई बात तो करो।

पूजा अज़ान प्रार्थना, सब ही कबूल हो
'दीवान' का पयाम, कोई बात तो करो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुस्तक समीक्षा

प्रकाश कान्त

समीक्षक

गधों का आदमी विमर्श: व्यंग्य का भिन्न तेवर

कविता, कहानी, व्यंग्य, यात्रा-संस्मरण हाइकु-गोविन्द सेन के सृजन के कई पक्ष हैं। इसके अलावा एक और महत्त्वपूर्ण बात यह कि वे हिंदी-निमाड़ी दोनों में सृजनरत रहे हैं। वे पश्चिम मध्य प्रदेश के सुदूर आदिवासी अंचल से सम्बन्ध रखते हैं। इस सबके चलते उनकी जो सृजन-भाषा विकसित हुई है वह इन सबसे निकल कर आई हुई ही है। वे अपेक्षित रूप से थोड़े कम मुखर रचनाकार हैं। उनके यहाँ जैसा कि उनका एक व्यंग्य भी है, कोई डंका नहीं बजता। इसके चलते जो कुछ कहना होता है वह उनकी रचनाएँ कहती हैं। वे अपने को लगभग बाहर या हाशिये पर रखते हैं। अपने व्यंग्य लेखन में भी!

'साहब का बसन्त' के बाद अभी उनका दूसरा व्यंग्य संग्रह आया है, 'गधों का आदमी विमर्श' (न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली) जिसमें पचास से अधिक व्यंग्य आलेख संकलित हैं। ये सब और जैसे कि उनके पहले के अधिकतर आलेख भी रहे हैं, ठहाकेदार हास्य और आक्रामक व्यंग्य के बीच के हैं। ना वे सस्ते लतीफ़े की हँसी पैदा करते हैं और न गर्दन उतारते मिलते हैं। और ऐसा किसी ख़ास कोशिश के चलते नहीं हुआ है, ना ही व्यंग्य की किसी गम्भीर बहस के कारण ही होता दिखता है। उनके व्यंग्य लेखन ने अपनी यात्रा के बीच खुद ही अपने लिए यह जगह निकाली है। इसी कारण उनके कुछ व्यंग्य लगभग अंडरटोन चलते हैं। जिनमें ऊपरी तौर पर बहुत ज़्यादा खदबदाहट नहीं महसूस होती। अपने बाहरी ढाँचे में बहुत महीन होते हैं। भीतर से चुभन पैदा करते हैं। उनके व्यंग्य सामान्यतया किसी वरदान में मिले ब्रह्मास्त्र की भूमिका में नहीं होते। उन्हें पता होता है की उन्हें अंततः कोई कुरुक्षेत्र नहीं जीतना है। इसीलिए वे अपने लेखन में किसी रथी-महारथी की मुद्रा में नहीं होते। अपने उपलब्ध शस्त्र के साथ अपने हिस्से का अत्यंत सीमित या छोटा महाभारत लड़ने वाले पैदल सैनिक बने रहते हैं। इस दूसरे संग्रह के लेखों में वे ऐसे ही सैनिक की तरह दिखाई देते हैं।

पत्नी, नेता जैसे पिटे-पिटाए विषयों पर आम तौर पर यहाँ व्यंग्य नहीं है। फूहड़ता की हद तक जानेवाली मंचीय हास्य कविता पहले ही ऐसे विषयों का मलीदा बना चुकी है। आजकल वह राष्ट्रवाद, सनातन वगैरह जैसे विषयों का मलीदा बनाने में लगी है।

संग्रह में सड़क हमारे बाप की है, गधों का आदमी विमर्श; भीड़, भगदड़ और मौक्ष; ज्ञान बाटते चलो, रेवड़ी ने अंधा बना दिया, चतुर बिल्ली और चाटुकार चूहे, झोली, झोला और झोल; घोड़े भी कभी गधे थे जैसे महत्त्वपूर्ण व्यंग्य हैं। जिनमें लहू-लुहान कर देने की हद तक वे सर्जरी नहीं करते। ऑपरेशन टेबल के सामने थोड़ी-सी कोमल मुद्रा में रहते हैं। अतिक्रमण, पुरस्कार-सम्मान, सीकरी, चुनाव, सत्ता की आत्म मुग्धता, जनसेवा, गधा और आदमी, रीढ़, आत्मा, रेवड़ियाँ जैसे कई विषयों पर इनमें व्यंग्य हैं। जिनमें वे ब्अपने व्यंग्य को बेदम करने की हद तक नहीं ले जाते। बारीक-सी पिन की चुभन, महीन-सी चिकौटी तक लाकर छोड़ देते हैं। इसके लिए जिस व्यंग्य भाषा का उपयोग करते हैं उसमें लोकप्रिय फ़िल्मी गीतों के मुखड़े-टुकड़े, लोक में प्रचलित कहावतें-मुहावरे, नेताओं के सूक्तिनुमा आत्मप्रलाप इत्यादि शामिल होते हैं। इनके अलावा नीति कथाओं को भी माध्यम बनाते हैं। संग्रह के आलेखों में इस सब को देखा जा सकता है।

विचार

मेघा राठी

अधूरे रिश्तों का सच: टूटन से आत्म पहचान तक

कुछ रिश्ते अपने आरंभ से ही एक अनकहे अधूरेपन को साथ लेकर आते हैं। बाहर से वे सामान्य दिखते हैं–बातचीत होती है, समय बिताया जाता है, उम्मीदें बुनी जाती हैं पर भीतर कहीं एक रिक्त स्थान बना रहता है। हम अक्सर यह मान लेते हैं कि समय, स्नेह और प्रयास इस खालीपन को भर देंगे। हमें विश्वास होता है कि धीरे-धीरे यह रिश्ता भी उन रिश्तों की तरह पूर्ण हो जाएगा, जिनमें सहजता, भरोसा और संतुलन होता है परंतु वास्तविकता अक्सर इससे भिन्न होती है। ऐसे रिश्तों की प्रकृति ही अधूरी होती है, वे आते हैं, कुछ समय साथ चलते हैं और फिर उसी अधूरेपन को और गहरा करके चले जाते हैं।

मनुष्य का स्वभाव आशा पर टिका होता है। जब किसी रिश्ते में कमी महसूस होती है तो मन तुरंत उसे पूरा करने की दिशा में प्रयास करने लगता है। हम अपने व्यवहार को और मधुर बनाते हैं, अधिक समय देते हैं, अधिक समझदारी दिखाने की कोशिश करते हैं। हर असफल प्रयास के बाद भी यह विश्वास बना रहता है कि अगली बार शायद सब ठीक हो जाएगा। यह 'शायद' ही हमें बार-बार उसी चक्र में खींच लाता है। लेकिन एक समय ऐसा आता है जब यह आशा ही एक भ्रम प्रतीत होने लगती है–एक ऐसा भ्रम, जो हमें थकाता है, परंतु टूटने में समय लेता है।

इन अधूरे रिश्तों को समझने के लिए एक सरल उदाहरण पर्याप्त है–फूटी हुई मटकी। हम उसमें बार-बार पानी भरते हैं, यह सोचकर कि इस बार वह भर जाएगी। कुछ क्षणों के लिए ऐसा लगता भी है कि मटकी भर गई है परंतु धीरे-धीरे पानी रिसकर समाप्त हो जाता है। यही प्रक्रिया रिश्तों में भी घटित होती है। हम अपने स्नेह, समय, समर्पण और ऊर्जा को उसमें उँडेलते हैं, परंतु वह स्थायी नहीं रह पाता। अंततः हमारे हाथ खाली ही रह जाते हैं।

विडंबना यह है कि हम इस सच्चाई को कहीं न कहीं जानते भी हैं। हमें आभास होता है कि यह रिश्ता लंबे समय तक स्थिर नहीं रह पाएगा फिर भी हम अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं उसे बचाए रखने में। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। कभी अधूरेपन का आकर्षण हमें बांधे रखता है–जो पूरा नहीं है, वही अधिक लुभावना लगता है। कभी हम उस व्यक्ति से नहीं, बल्कि उस संभावना से जुड़ जाते हैं जो हमने अपने मन में उस रिश्ते के लिए रची होती है। और कभी-कभी हम अपने ही समर्पण के कारण बंध जाते हैं–'इतना कुछ दे देने के बाद लौट आना कठिन लगता है।

जब ऐसे रिश्ते अंततः समाप्त होते हैं तो उनका जाना अचानक नहीं होता। वे धीरे-धीरे हमारे भीतर एक कड़वाहट, एक थकान और एक स्वीकृति पैदा करते हैं। ऐसा लगता है जैसे हर दिन एक छोटी-सी पीड़ा हमें उस अंतिम क्षण के लिए तैयार कर रही हो। और जब विदाई का समय आता है तो बाहर से भले ही हम शांत दिखाई दें, भीतर कहीं एक गहरी कसक बनी रहती है। अधूरे ख्वाब, अधूरी बातें, टूटे हुए वादे–ये सब स्मृतियों में स्थायी रूप से बस जाते हैं।

परंतु प्रश्न यह उठता है कि ऐसे रिश्तों का हमारे जीवन में औचित्य क्या है। यदि वे केवल पीड़ा और खालीपन ही देते हैं, तो उनका होना क्यों आवश्यक है? इसका उत्तर सरल नहीं है, परंतु गहरा अवश्य है। ये रिश्ते केवल हमें किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं बल्कि स्वयं से भी मिलवाते हैं।

जब हम किसी अधूरे रिश्ते से गुजरते हैं तो वह यात्रा केवल बाहरी नहीं होती। वह हमारे मन और मस्तिष्क के भीतर भी चलती है। जब ये दोनों एक होकर सोचने लगते हैं तब हम अपने व्यवहार पर विचार करते हैं, अपनी अपेक्षाओं को परखते हैं, अपनी सीमाओं और कमजोरियों को पहचानते हैं। यह आत्ममंथन धीरे-धीरे हमें उस बिंदु तक ले जाता है जहाँ हम स्वयं से साक्षात्कार करते हैं।

दूसरों से मिलना और स्वयं से मिलना–इन दोनों में मौलिक अंतर है। बाहरी मुलाकातें हमें सामाजिक बनाती हैं, संबंधों का विस्तार करती हैं परंतु स्वयं से की गई ईमानदार मुलाकात हमें भीतर से मजबूत करती है। यह हमें हमारी वास्तविकता से परिचित कराती है–हम कौन हैं, क्या चाहते हैं और किन बातों पर समझौता नहीं कर सकते।

स्वयं को पहचानना एक लंबी प्रक्रिया है और अक्सर यह प्रक्रिया किसी टूटन या अधूरेपन से ही शुरू होती है। जब कोई रिश्ता हमें पूरा नहीं कर पाता तब हम पहली बार यह प्रश्न पूछते हैं कि 'मुझे वास्तव में क्या चाहिए?' यही प्रश्न आत्म-खोज की दिशा में पहला कदम होता है।

जब व्यक्ति स्वयं के गुणों और दोषों को समझने लगता है, तो वह बाहरी सहारों पर कम निर्भर होने लगता है। उसे यह एहसास होता है कि उसकी प्रसन्नता किसी एक व्यक्ति या रिश्ते पर निर्भर नहीं है। वह अपने भीतर ही संतुलन और संतोष के स्रोत खोजने लगता है। यह आंतरिक मजबूती ही उसे जीवन की अन्य चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है।

एक बार जब यह आंतरिक स्थिरता विकसित हो जाती है तब अधूरे रिश्तों का आकर्षण भी कम हो जाता है। व्यक्ति समझने लगता है कि हर संबंध को निभाना आवश्यक नहीं है और हर संबंध का पूर्ण होना भी संभव नहीं है। कुछ रिश्ते केवल अनुभव देने के लिए आते हैं न कि स्थायी बनने के लिए।

इस दृष्टि से देखा जाए तो अधूरे रिश्ते भी व्यर्थ नहीं होते। वे हमें तोड़ते जरूर हैं परंतु उसी प्रक्रिया में हमें गढ़ते भी हैं। वे हमें यह सिखाते हैं कि समर्पण और आत्म-सम्मान के बीच संतुलन कैसे बनाए रखा जाए। वे हमें यह समझाते हैं कि प्रेम केवल देने का नाम नहीं है, बल्कि स्वयं को सुरक्षित रखने की भी एक कला है।

अंततः, इन रिश्तों का एकमात्र और सबसे सुंदर सत्य यही है कि वे हमें स्वयं से मिलवाते हैं। वे हमारे भीतर छिपी उस शक्ति को उजागर करते हैं जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। जब हम स्वयं को पहचान लेते हैं तब जीवन का हर अधूरापन भी एक नई समझ, एक नई दिशा और एक नए अर्थ के साथ भरने लगता है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

अजंता, एलोरा एवं बंबई कला विद्यालय

ब्रिटिश ग्रामीण क्षेत्र अपने ही हाल पर थे जबकि शहर तेज रफ्तार से अपनी स्थिति में सुधार कर रहा था। यह वही समय था जब इंग्लैंड में भी तमाम बदलाव की जरूरत थी और वो धीरे-धीरे उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। ब्रिटिश शासकों में विस्तारवाद की भूख थी, चालाकी और जरूरत के अनुसार किसी भी स्तर तक उतर जाने की चाह भी फलतः समय के साथ दुनिया भर में उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और जहाँ तक हो सका विस्तारित क्षेत्रों में अपने विचारों को समृद्ध बताकर वहाँ के लोगों पर थोपा। वहाँ के लोगों में वहीं के लोगों द्वारा हीनभावना के प्रवृत्ति के प्रति उकसाकर उन्हें मानसिक विपन्नता के एक सीमा तक ले जाकर छोड़ने के बाद उनके सामने विकल्प के रूप में अपनी शिक्षा नीति रख दे रहे थे जो श्रेष्ठता के दंभ में नहाए हुए थे।

उन्नीसवीं सदी में काफी कुछ बदल रहा था। लोग बदलाव के नाम पर तमाम प्रयास कर रहे थे। हालांकि कुछ बदलाव ही था जिसमें वाकई सुधार की आवश्यकता थी, जो वाकई किसी के हित के लिए हो रहा था, जहाँ से पिछड़ेपन की बू आ रही थी बाकी तो आज की ही तरह बदलाव से ज्यादा उसी बहाने खुद के रहन-सहन और कद को बढ़ाने यानी प्रयास करने वाले अपने खुद के स्तर में बदलाव चाहते थे। जैसा कि पहले ही जिक्र किया जा चुका है कि भारत में कला विद्यालय खुलने लगे थे। मद्रास और कलकत्ता के बाद अब बंबई कला विद्यालय पर चर्चा की बारी है उसी से पूर्व कुछ बात भी जरूरी है। ब्रिटिश सत्ता जो भारत के तमाम विसंगतियों को सुधारने के बात पर बल दे रही थी वही अपने वहाँ के मजदूर वर्ग के दयनीय स्थिति सहित और भी कई मुद्दों पर आँख बंद कर लेने में भी माहिर थी। ब्रिटिश ग्रामीण क्षेत्र अपने ही हाल पर थे जबकि शहर तेज रफ्तार से अपनी स्थिति में सुधार कर रहा था। यह वही समय था जब इंग्लैंड में भी तमाम बदलाव की जरूरत थी और वो धीरे-धीरे उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। ब्रिटिश शासकों में विस्तारवाद की भूख थी, चालाकी और जरूरत के अनुसार किसी भी स्तर तक उतर जाने की चाह भी फलतः समय के साथ दुनिया भर में उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और जहाँ तक हो सका विस्तारित क्षेत्रों में अपने विचारों को समृद्ध बताकर वहाँ के लोगों पर थोपा। वहाँ के लोगों में वहीं के लोगों द्वारा हीनभावना के प्रवृत्ति के प्रति उकसाकर उन्हें मानसिक विपन्नता के एक सीमा तक ले जाकर छोड़ने के बाद उनके सामने विकल्प के रूप में अपनी शिक्षा नीति रख दे रहे थे जो श्रेष्ठता के दंभ में नहाए हुए थे। मैकाले के नीति पर भी ध्यान रखना होगा जहाँ उन्होंने खुद के शिक्षा व्यवस्था को उच्च बाकी भारतीय शिक्षा को तुच्छ समझने और लोगों को समझाने पर भी काम किया, जिसमें मैक्समूलर का भी भरपूर सहयोग रहा जिसका भारतीय विद्यार्थियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। संस्कार एवं संस्कृतियों पर गहरा कुठाराघात हुआ। हीनभावना लोगों में प्रबल होती गई। लोग अपने हर क्रिया पर उनके प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे और उनसे मिले चंद शब्दों को सम्मान मान बैठते रहे। रवि वर्मा को 'पूर्व का राफेल' कहने से आखिर क्या सिद्ध करने की चाहत रही होगी? मैक्समूलर को भारतीय धर्मग्रंथों एवं वेदों का विशद ज्ञाता बताकर अंग्रेज अपने उद्देश्य में सफल होते रहे। जबकि वह था इससे बिल्कुल भिन्न। मैकाले और मैक्समूलर को भारतीय शिक्षा, संस्कार, संस्कृति एवं कला हेतु बहुत अच्छा नहीं माना जा सकता। एकतरफा मानसिकता के साथ किया गया कार्य उनके देशहित तो हो सकता है पर दोनों को खुद के विद्वता पर शंका जरूर होता रहा होगा। उन्हें अपने किए पर खुद ही कभी-कभी अपने ही प्रश्नों से जूझना पड़ता रहा होगा जिसका उत्तर उनके पास नहीं रहता रहा होगा। खैर इन सभी से परे हैवेल नामक एक ऐसी थाती उस समय भी रही है जिन्हें वाकई कला को समर्पित व्यक्ति कहा जा सकता है जो देश, काल और परिस्थितियों से परे जाकर भारतीय विरासत के प्रति छात्रों को हमेशा जागरूक करते रहे। उनका मानना था कि भारतीय विरासत ब्रिटेन की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध एवं विशद है, और हर भारतीय को उन पर गर्व करने का पूरा अधिकार है। भारतीय कला में भाव, विचार, लयता, वर्णिकाभंग सहित और भी विशेषताओं का इतना विशाल सागर है कि वाकई हर भारतीय को उस पर नाज़ हो। वाकई में हम भारतीय अगर अपने थाती को देखें, समझें तो उनके विशेषताओं पर हमें गर्व होगा। अजंता, एलोरा, खजुराहो सहित और भी प्राचीन एवं नूतन गुफाओं मंदिरों के तरफ देखें वहाँ के कलाकृतियों की तरफ देखें तो समृद्धता पर खुश होने को जी करता है बस शर्त ये है कि अपने भारतीयता के नजरिए से देखें ना कि किसी पाश्चात्य विचारों के लिबास को ओढ़कर। रही बात अंग्रेजों के यहाँ की धरती पर बहुत अधिक विकास करने का मसलन सड़क, रेल की पटरियाँ, कृषि को भी औद्योगिक रूप में बदलने हेतु तमाम प्रयोग करने का, तो लोगों को लगता रहा कि कितना विकास हुआ जबकि उस विकास से फायदा किसका है जैसे मुद्दों पर शांति ही रही जबकि सच्चाई यह रही है कि इन सभी चीजों से असली फायदा तो इंग्लैंड का ही रहा। अंग्रेजों ने भारतीय परिस्थितियों का फायदा लेकर व्यापार के जरिए सत्ता तक का सफर किया। किसानों को नकदी फसलें उगाने पर मजबूर

किया गया। ये फसलें अंग्रेजी कारखानों हेतु कच्चे माल के रूप में उनके देश भेजी जाती थीं। माल तैयार होने के बाद वापस भारत के बाजारों में ऊँचे दामों पर बिकने हेतु आ जाती थीं। कला विद्यालय खुलने के पीछे भी व्यापार ही उद्देश्य था इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता। कृषि के बाद विभिन्न प्रकार के वस्त्रों, विभिन्न पदार्थों पर दस्तकारी, लकड़ी और मिट्टी की कारीगरी, सहित तमाम लोक कलाओं पर भी उन सभी की नजर थी और इनसे कैसे फायदा प्राप्त किया जा सकता है इस पर भी वो लोग लगातार काम करते रहे साथ ही ये सारी चीजें यहाँ से खत्म ना हो जाए इस हेतु भी कला विद्यालय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। भारत में कारीगरी का क्षेत्र बहुत ही समृद्ध और व्यापार के मामले में भी सम्पन्न था। विश्व में बढ़ते मशीनीकरण से कला एवं शिल्प के नष्ट हो जाने के खतरे से कला के प्रति समर्पित लोग सकते में थे। जॉन रस्किन जो अपने दौर के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे, कला लेखक के साथ ही कलाकारी में भी हाथ आजमाते रहते थे और जिनके विचारों में प्रकृति कला एवं समाज का समन्वय भी दर्शित है, ने तो कला, कौशल युक्त एक गाँव की ही स्थापना कर डाली थी। यहाँ प्रकृति और प्रकृति के प्रति प्रेम था पर सभी अंग्रेजों में इस चीज की कमी थी।

कला विद्यालय के श्रृंखला में मद्रास एवं कलकत्ता के बाद अगला नंबर बंबई के कला विद्यालय का था। 1857 में शुरू हुए इस विद्यालय को स्थापित करने का श्रेय सर जमशेद जी जीजेभॉय को जाता है। शुरू में कला की कक्षाएं तो चलती रहीं पर ग्रिफिथ के समय गजब का परिवर्तन देखने को यहाँ मिला। 1878 में इसका नाम सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट कर दिया गया और 90 में यह सरकार के अधीन हो गया। जल्दी ही विद्यार्थियों द्वारा अजंता के भित्तिचित्रों की प्रतिलिपियाँ बनाई जाने लगी इसी बहाने शिक्षक भी भारतीय थाती से लगातार परिचित होते रहे। ग्रिफिथ का इसमें बहुत योगदान रहा। विद्यार्थियों द्वारा ये कार्य पूरे लगन और निष्ठा से किया गया जिसके बाद अजंता का प्रभाव उनके बाद के कृतियों में भी नजर आने लगा था। मिट्टी के बर्तनों, सहित और भी जगह अजंता की कृतियाँ नजर आने लगी थी (संलग्न चित्र अजंता की कॉपी है जो साभार गूगल से है)। लॉकवुड किपलिंग के कार्य भी सराहनीय रहे। विद्यालय के इमारत को डिजाइन करने का श्रेय वास्तुकार जॉर्ज ट्विग मोलेसी को है। कला विद्यालय में निरन्तर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता रहा पर धीरे-धीरे विद्यार्थियों के कामों में भारतीय तत्वों का समावेश दिखने लगता है। हालांकि एकेडमिक अध्ययन पर ही जोर हर विद्यालय में रहा जो आगे चलकर भी देखने को मिला पर समय के साथ विद्यार्थी जो आगे चलकर स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य कर रहे थे, अपने कृतियों में बहुत कुछ बदलाव और प्रयोग करते हुए आगे बढ़ रहे थे। इसी समय राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट (1857) भी वजूद में आ चुका था, जिसकी स्थापना 'महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय' ने मदरसा-ए-हुनेरी नाम से की थी। बाद में समय के साथ क्रमशः इसके नाम भी बदलते रहे। विदेशी प्राचार्य वेलेंटाइन से लेकर प्रथम भारतीय प्राचार्य असित कुमार हल्दार से होते हुए और भी कई वरिष्ठ कलाकार यहाँ की शोभा बने और कला कर्म को आगे बढ़ाए। कुछ वर्षों बाद मेयो स्कूल ऑफ आर्ट लाहौर में भी कला विद्यालय खुला। समय के साथ ही और भी विद्यालय जैसे शांति निकेतन, लखनऊ कला विद्यालय, शारदा उकील कला विद्यालय, वनस्थली विद्यापीठ, कला विद्यालय नई दिल्ली, ललित कला विभाग एम. एस. विश्वविद्यालय बड़ोदरा एवं काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी सहित और भी जगहों पर कला में अध्ययन होने लगे थे और खुशी की बात ये कि अब कलाकार अपने विचार एवं कृतियों में बहुत कुछ परिवर्तन करने लगे थे। स्वतंत्रता का असर अब तक कलाकृतियों पर भी नजर आने लगा? था। कला का आसमान भारतीय पटल पर भी अब तक विशाल हो चुका था और कलाकार भारतीय कृतियों को लेकर वैश्विक स्तर तक अपनी बात आसानी से पहुँचा पा रहे थे। नाम जो अब तक अंग्रेजियत से भरे हुए थे धीरे-धीरे भारतीय होने लगे थे। राजा रवि वर्मा, अवनींद्र नाथ, गगनेंद्र नाथ, रवींद्रनाथ, नंदलाल बोस, असित कुमार, देवी प्रसाद राय चौधरी, सूजा, रजा, हुसैन सहित और भी कलाकार अब तक अपने कला का लोहा मनवाने लगे थे। चित्र साभार गूगल से है।

भगवान परशुराम जयंती पर विशेष

अमित राव पवार

युवा लेखक

पराक्रम, तप और सामाजिक न्याय का शाश्वत संदेश

भारत की सांस्कृतिक चेतना विविधताओं से परिपूर्ण है,जहाँ प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट पहचान और आध्यात्मिक परंपराओं के लिए जाना जाता है। मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र इसी परंपरा का एक जीवंत उदाहरण है। यह भूमि केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं,बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध रही है। इसी क्षेत्र (जानापाव) से जुड़ी भगवान परशुराम की परंपरा इसे एक विशिष्ट गौरव प्रदान करती है। भगवान परशुराम का व्यक्तित्व भारतीय चिंतन में शक्ति,तप,ज्ञान और न्याय का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करता है। भगवान परशुराम को भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है। उनका जन्म महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका के यहाँ हुआ। वे भृगु वंश के थे और विशेष बात यह है कि वे एकमात्र ऐसे अवतार हैं,जिन्होंने ऋषि कुल में जन्म लेकर भी क्षत्रिय धर्म के अनुरूप पराक्रम और युद्धकला में अद्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार उनका व्यक्तित्व ज्ञान और शक्ति के संतुलन का प्रतीक बन जाता है।

परशुराम जी के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी कठोर तपस्या और गुरु परंपरा से प्राप्त ज्ञान है। उन्होंने अपने पिता से वेदों का अध्ययन किया और कश्यप ऋषि से मंत्र दीक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात उन्होंने भगवान शिव की आराधना कर दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए। उनके प्रमुख अस्त्र 'परशु' के कारण ही उनका नाम परशुराम पड़ा। यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि उनके जीवन में आध्यात्मिक साधना और युद्धक क्षमता का अद्भुत समन्वय था। प्रायः लोककथाओं में यह उल्लेख मिलता है कि भगवान परशुराम ने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर दिया। किंतु इस कथन को शाब्दिक रूप में न लेकर उसके प्रतीकात्मक अर्थ को समझना आवश्यक है। वास्तव में उनका संघर्ष उन शासकों के विरुद्ध था जो अत्याचारी,अन्यायी और धर्म से विमुख हो चुके थे। यदि उन्होंने समस्त क्षत्रियों का संहार कर दिया होता,तो उस कालखंड में अन्य धर्मनिष्ठ राजा,जैसे दशरथ और जनक,अस्तित्व में नहीं होते। अतः परशुराम का संघर्ष व्यवस्था के विरुद्ध नहीं,बल्कि अव्यवस्था और अन्याय के विरुद्ध था।

भारतीय महाकाव्यों और पुराणों में परशुराम जी की उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। महाभारत में उन्हें भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण जैसे महान योद्धाओं का गुरु बताया गया है। वहीं रामायण में भगवान राम और परशुरामजी के संवाद के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि परशुराम को अत्यंत आदर और सम्मान प्राप्त था। यह दर्शाता है कि वे केवल एक योद्धा ही नहीं,बल्कि एक महान आचार्य और मार्गदर्शक भी थे।भगवान परशुराम का जीवन केवल युद्ध और पराक्रम तक सीमित नहीं था। वे एक महान दानी और समाज सुधारक भी

थे। उन्होंने संपूर्ण पृथ्वी को जीतकर महर्षि कश्यप को दान में दे दिया और स्वयं तपस्या के लिए महेंद्र पर्वत की ओर प्रस्थान किया। यह त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त उन्होंने युद्ध से प्रभावित समाज के पुनर्निर्माण का कार्य भी किया। विधवाओं और अनाथों के पुनर्वास तथा समाज में संतुलन स्थापित करने के उनके प्रयास उन्हें एक दूरदर्शी सामाजिक चिंतक के रूप में स्थापित करते हैं। भगवान परशुराम की शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि व्यक्ति का मूल्य उसकी जाति या जन्म से नहीं,बल्कि उसके गुणों और कर्मों से निर्धारित होता है। उन्होंने ज्ञान और तप की महत्ता को स्थापित किया और यह संदेश दिया कि समाज में नैतिकता और न्याय का पालन अनिवार्य है।

अक्षय तृतीया हिंदू धर्म का एक अत्यंत शुभ और पवित्र पर्व है। भविष्य पुराण के अनुसार,इस तिथि पर किए गए कर्मों का फल कभी समाप्त नहीं होता,इसी कारण इसका नाम अक्षय तृतीया पड़ा। यह भी कहा जाता है कि इस दिन भगवान परशुराम का जन्म हुआ था,इसलिए इसे परशुराम जयंती के रूप में भी मनाया जाता है।अक्षय तृतीया का उल्लेख विष्णुधर्मसूत्र,मत्स्य पुराण,नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे प्रमुख धर्मग्रंथों में विस्तार से मिलता है,जिससे इसकी धार्मिक महत्ता और अधिक स्पष्ट होती है।लोकमान्यताओं और कथाओं में भी इस दिन का विशेष महत्व है।अक्षय तृतीया न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है,बल्कि यह दिन सद्कर्म, श्रद्धा और पुण्य अर्जित करने का विशेष अवसर भी प्रदान करता है।अक्षय तृतीया,जिसे परशुराम जयंती के रूप में भी मनाया जाता है,उनके जीवन और आदर्शों को स्मरण करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। 'अक्षय' का अर्थ है जिसका कभी क्षय न हो,और यह दिन इसी भावना का प्रतीक है कि सत्य,धर्म और पुण्य कभी नष्ट नहीं होते। इस दिन किए गए दान, जप और तप को विशेष फलदायी माना गया है।

आज के समय में,जब समाज अनेक प्रकार की चुनौतियों और नैतिक संकटों से जूझ रहा है,भगवान परशुराम का जीवन हमें एक स्पष्ट दिशा प्रदान करता है। उनका संदेश है कि शक्ति का उपयोग केवल रक्षा और न्याय के लिए होना चाहिए,न कि उत्पीड़न के लिए। साथ ही,ज्ञान और तप के बिना शक्ति अधूरी है।मालवा की यह पावन भूमि,जो परशुराम की परंपरा से जुड़ी हुई है, हमें यह स्मरण कराती है कि भारत की आत्मा उसके आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों में निहित है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इन मूल्यों को केवल इतिहास और कथाओं तक सीमित न रखें,बल्कि उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करें।इस प्रकार,भगवान परशुराम का जीवन और मालवा की सांस्कृतिक विरासत मिलकर एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करते हैं,जो न केवल अतीत की धरोहर है,बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक मार्गदर्शक प्रकाश है।

अनंत समृद्धि का दिन है अक्षय तृतीया

पर्व विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

हमारे देश में समय-समय पर बहुत से त्यौहार मनाये जाते हैं। इसलिए हमारे देश को त्योहारों का देश भी कहते है। हिन्दू धर्मावलम्बियों के प्रमुख त्योहारों में से एक अक्षय तृतीया है जिसे हम आखा तीज भी कहते हैं। अक्षय तृतीया देश भर में हिंदुओं द्वारा मनाए जाने वाले सबसे पवित्र और शुभ दिनों में से एक है। माना जाता है कि इस दिन से जो भी कार्य इस शुरू होता है वो हमेशा पूर्ण होता है। यह त्यौहार हर वर्ष वैशाख महीने में शुक्ल पक्ष के तृतीया को आता है। इस वर्ष अक्षय तृतीया 20 अप्रैल को है।

अक्षय तृतीया को शादी का अबूझ मुहुर्त माना जाता हैं। क्योंकि इस दिन शुभ कार्य करने के लिए मुहूर्त नहीं देखना पड़ता। इसी कारण अक्षय तृतीया को बहुत अधिक शादियां होती हैं। अक्षय तृतीया का पर्व बसंत और ग्रीष्म के संधिकाल का महोत्सव है। इस तिथि में गंगा स्नान, पितरों का तिल व जल से तर्पण और पिंडदान भी पूर्ण विश्वास से किया जाता है जिसका फल भी अक्षय होता है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में होती है। क्योंकि सतयुग की समाप्ती पर त्रेतायुग का आरंभ इसी तिथि से हुआ है।

माना जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में जन्म लिया था। इसीलिये इस दिन को परशुराम जयंती के रूप में मनाते हैं। मान्यता है कि आखा तीज के दिन राजा भागीरथ गंगा नदी को पृथ्वी पर लाये थे। अक्षय तृतीया के दिन भगवान विष्णु तथा उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। आखा तीज के दिन ही देवी अन्नपूर्णा का जन्म भी हुआ था। यह वह दिन था जब भगवान कृष्ण ने अपनी सारी संपत्ति और सौभाग्य अपने गरीब मित्र सुदामा को दे दिया था।

अक्षय शब्द का अर्थ होता है कभी न मिटने या कम होने होने वाला। संस्कृत में अक्षय (अक्षय) शब्द का अर्थ समृद्धि, आशा, खुशी, सफलता होता है। जबकि तृतीया का अर्थ है चंद्रमा का तीसरा चरण। इसका नाम हिंदू कैलेंडर में वैसाख के वसंत महीने के तीसरे चंद्र दिवस के नाम पर रखा गया है। इस त्योहार को हम अपनी भाषा में आखातीज नाम से भी जानते हैं। जिसका अर्थ होता है जो कभी खत्म ना होने वाला। इसलिए माना जाता है की यह दिन हमारे लिए वस्तुओं की खरीदारी का सबसे शुभ दिन माना जाता है। 'अक्षय' शब्द का अर्थ होता है जो कभी खत्म न हो। इसी कारण इस दिन किए गए सभी अच्छे कार्यों, जैसे जप, यज्ञ, दान-पुण्य, का पुण्य कभी भी समाप्त नहीं होता। माना जाता है कि अक्षय तृतीया का दिन व्यक्ति को अनंत सुख और समृद्धि की प्राप्ति करता है। इस दिन जितने पुण्य किए जाए उतने हमें हमारे लिए कम है।

जैन धर्म में अक्षय तृतीया एक महत्वपूर्ण तिथि है जिसे दान और पुण्य कार्य करने के लिए विशेष रूप से शुभ माना जाता है। इस दिन भगवान ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर) ने एक वर्ष की तपस्या के बाद गन्ने के रस से पारणा किया था इसलिए इस दिन को अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता हैं। अक्षय तृतीया के दिन यूं तो आप किसी भी देवी-देवता की पूजा कर सकते हैं। लेकिन विशेष रूप से इस दिन माता लक्ष्मी, भगवान गणेश और धन के देवता कुबेर की पूजा करने का विधान है। अन्य त्योहारों की तरह इस त्यौहार में भी दीपक जलाते हैं। इस दिन किया गया परोपकार हमारे लिए जीवन को सुखी बना देता हैं। इसीलिए इस दिन लोग गरीबों को भोजन कराते हैं तथा उनकी सहायता करते हैं। देश के अनेक हिस्सों में इस तिथि का अलग-अलग महत्व है। जैसे उड़ीसा और पंजाब में इस तिथि को किसानों की समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है। तो बंगाल में इस दिन गणपति और लक्ष्मीजी की पूजा का विधान है।

इतना पवित्र पर्व होने के उपरांत भी इस दिन बड़ी संख्या में होने वाले बाल विवाह इस पर्व के महत्व को कम करते हैं। अबूझ सावा मानकर बड़ी संख्या में लोग अपने नाबालिग बच्चों की इस दिन शादी कर देते हैं। देश में अक्षय तृतीया (आखा तीज) पर हर वर्ष हजारों की संख्या में बाल विवाह किए जाते हैं। तमाम प्रयासों के बावजूद हमारे देश में बाल विवाह जैसी कुप्रथा का अन्त नही हो पा रहा है। भारत में बेटी-बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान के शुरू होने के बावजूद एक नाबालिग बेटी की जबर्दस्ती शादी करा दी जा रही है। बाल विवाह मनुष्य जाति के लिए एक अभिशाप है। ऐसे पवित्र दिन का महत्व बनाए रखने के लिए समाज को इस दिन होने वाली कुरीतियों पर रोक लगाकर एक सकारात्मक संदेश देना होगा। तभी सार्थकता बनी रह पाएगी।

वेबसिरीज़ समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

जुए की दुनिया से मिलना है तो 'मटका किंग' देखिये

नई मुम्बई हो या पुराना बाम्बे ,यह महानगर और इसकी पहचान बनाने वाले चरित्र हमेशा से चर्चा में रहे हैं । इन पहचान बनाने वाले चरित्रों में भी यदि अण्डरवर्ल्ड, क्राइम और जुएँ की बात हो, तो उन चरित्रों को केंद्र में रखकर फिल्म बनाने वाले कुछ ज्यादा ही उत्साहित नज़र आते हैं । यही वजह है कि - 'सैराट' जैसी क्रूर और दिल को झकझोर देने वाली फिल्म बनाने वाले नागराज मंजुले ने पिछले दिनों जब वेबसिरीज की दुनिया में कदम रखा, तो उन्होंने 60-70 के दशक के मटका किंग के नाम से प्रचलित जुएँ की उस दुनिया को रचा, जहाँ न केवल गरीब और मेहनतकश लोगों को एक सपना बेचा गया था, बल्कि देश के आर्थिक तंत्र को भी प्रभावित किया था।

कहानी कॉटन ट्रेडर बृज भट्टी के (यह भूमिका विजय वर्मा ने निभाई है) आसपास बुनी गई है । बृज़ मुंबई की एक चाल में अपने भाई लच्छू (भूपेंद्र जाड़ावत) और पत्नी बरखा (साई ताम्हणकर) के साथ तंगहाली में जी रहा है। लालजी भाई छगानी (गुलशन ग्रोवर) के अधीन काम करते हुए उसकी कुंठा और इज्जत की भूख उस दिन फट पड़ती है, जब जरूरत के वक्त उसे बेइज्जत कर बाहर निकाल दिया जाता है। यहीं से बृज बगावत करता है और खड़ा करता है जुए का एक नया खेल, जिसे वो मटका नाम देता है। उसके साथ जुड़ते हैं डगडू (सिद्धार्थ जाधव), एक बदनाम पूर्व सैनिक गुलरुख (कृतिका कामरा) और एक अमीर पारसी विधवा। सिरीज़ में बृज, डगडू और गुलरुख, तीनों मिलकर जुएं का एक ऐसा लुभावना दृष्यबंध रचते हैं जिसमें आम आदमी लालच और उम्मीद के बीच फँसता चला जाता है। मटका, बृज के लिए दौलत का अम्बार लगा देता है, लेकिन इसी के साथ उसका सब कुछ दांव पर लगने लगता है। रिश्ते टूटते हैं। भरोसे बिखरते हैं। वह पुलिस और अण्डरवर्ल्ड, दोनों के निशाने पर आ जाता है। आखिरकार, यह कहानी सिर्फ एक साम्राज्य बनाने की नहीं, बल्कि उसकी रचना प्रक्रिया को समझने -समझाने वाली है।

निर्देशक नागराज मंजुले की वेबसिरीज की शुरुआत बहुत ही सरल अन्दाज में होती हैं, मगर जैसे ही कहानी में 'मटका' का खेल आता है, स्टोरी रुचिकर हो जाती है। असल में मटका वाले कॉन्सेप्ट को नागराज ने बहुत ही कमाल तरीके से बुना है। जुएँ और नम्बरों के गेम्स में रुचि रखने वाले इससे और ज्यादा प्रभावित हो पाएंगे। पहले तीन एपिसोड्स में कहानी बहुत ही तेज़ी से आगे बढ़ती हैं, मगर फिर बीच में बिखर जाती है, हालांकि प्री-क्लॉइमैक्स और क्लाइमैक्स के एपिसोड्स में कहानी और किरदार अपने तेवर में आ जाते हैं। कसा हुआ पटकथा वैसे नागराज की खूबी है, मगर यहाँ वो कमजोर पड़ते दिखे । नागराज ने लेखकों के साथ मिलकर सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को छुआ है, मगर वे उसकी गहराई में नहीं जाते। कुछ सब प्लॉट्स लेंथ बढ़ाने का काम करते है। 'अमीर हो या गरीब, सबका पेट्रोल एक ही है, उम्मीद' और 'जंगल में शेर मांस सूंघता है तो बाकी टोली नाचती है क्यों? क्योंकि सबको पता है कि खाना मिलने वाला है' जैसे चुटीले डायलॉग मजेदार हैं।

अभिनय की बात की जाए, तो विजय वर्मा अपने एक्टिंग की कमाल की रेंज दर्शाते हैं। अपने चरित्र के हर रंग, चाहे वो आंतरिक संघर्ष हो या महत्वाकांक्षा अथवा नैतिक पतन, वो सबकुछ बखूबी निभा ले गए हैं। सही मायनों में वे सिरीज की जान हैं। कृतिका कामरा ने गुलरुख के चरित्र में खूबसूरती के साथ-साथ गहराई भी दी है।साई ताम्हणकर ने बृज भट्टी की पत्नी बरखा के रूप में दमदार साबित हुई हैं। कई दृश्यों में उनका मौन भी बहुत कुछ कह जाता है। गुलशन ग्रोवर अपने दमदार अंदाज में लालजी भाई के किरदार को जीवंत करते हैं। सिद्धार्थ जाधव ने अपने चरित्र को अपने विशिष्ट अंदाज में निभाकर यादगार बनाया है। जेमी लीवर, गिरीश कुलकर्णी, साइरस साहूकार, भूपेंद्र जाड़ावत और सिमरन अश्विनी भी कहानी को और समृद्ध बनाते हैं।

तकनीकी रूप से फिल्म बहुत मजबूत है। इसमें सिनेमैटोग्राफर सुधाकर रेड्डी यक्कंती ने साठ-सत्तर के दशक की पुरानी बम्बई को बेहद खूबसूरती से जीवंत किया है। चाहे वो भीड़भाड़ वाले बाजार हों या अंधेरे जुए के अड्डे। सेट्स और कॉस्ट्यूम्स भी उस दौर को विश्वसनीय बनाते हैं। अमित त्रिवेदी, पराग छाबड़ा, बी प्रसन्ना और अजय जयंती का संगीत साख के दशक की अनुभूति करवाता है केतन सोढा का बैकग्राउंड स्कोर दमदार है।

भाजपा सरकार बनने पर जनकल्याण के कार्य तेज होंगे : डॉ.मोहन यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को पश्चिम बंगाल के कोलकाता नार्थ सबअर्बन जिले के कमरहाटी एवं मेदनीपुर जिले के खड़गपुर सदर विधानसभा में भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में घर-घर संपर्क एवं रोड शो कर जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल की प्रगति और बांग्लादेशी घुसपैठ पर रोक के लिए भाजपा जरूरी है। पश्चिम बंगाल की जनता तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के जंगलराज से मुक्ति चाहती है। पश्चिम बंगाल की प्रगति के लिए राज्य में भाजपा की सरकार जरूरी है। बंगाल में भाजपा की सरकार बनने के बाद जनकल्याण के कार्य तेज होंगे। मुख्यमंत्री ने कमरहाटी में भाजपा प्रत्याशी श्री अरुप चौधरी एवं खड़गपुर सदर विधानसभा में भाजपा के वरिष्ठ नेता व प्रत्याशी श्री दिलीप घोष के समर्थन में विभिन्न नगरों, बस्तियों एवं कॉलोनियों का पैदल भ्रमण कर जनता से भाजपा प्रत्याशियों को अपना आशीर्वाद प्रदान कर प्रचंड बहुमत से विजयी बनाने की अपील की है।

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में कल्याणकारी कार्यों को तेज गति से बढ़ाया जाएगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कमरहाटी एवं खड़गपुर सदर की गलियों में घूमकर जनता से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान करने की अपील की। उन्होंने स्थानीय लोगों की समस्याएं सुनीं और भरोसा दिलाया कि राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने पर प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में जनकल्याण के कार्यों को तेज गति से आगे बढ़ाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पंश्चिम बंगाल देश के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगा तो विकास की राह पर बहुत आगे बढ़ेगा। पश्चिम बंगाल कभी देश का सबसे अच्छा राज्य था, परंतु पहले कम्युनिस्ट पार्टी और बाद में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सरकारों ने बंगाल का पूरा बेड़ा गर्क कर दिया।

बांग्लादेशी घुसपैठियों को रोकने के लिए एसआईआर जरूरी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सहित भाजपा व एनडीए शासित राज्य तेजी से प्रगति कर रहे हैं, वही पश्चिम बंगाल पिछड़ रहा है। अब बंगाल की जनता जंगलराज से मुक्ति चाहती है और विकसित प्रदेश बनाकर अन्य प्रदेशों से आगे निकलना चाहती है। सभी राज्यों में चुनाव आयोग के निर्देश पर एसआईआर कराया गया है। इस प्रक्रिया में सही मतदाताओं की पहचान की गई।

पश्चिम बंगाल की जनता अब परिवर्तन और प्रगति की ओर बढ़ रही है

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पश्चिम बंगाल में हालात 'जंगलराज' जैसे हो गए हैं। पश्चिम बंगाल की जनता 'जंगलराज' से मुक्ति चाहती है। लोगों की इच्छा है कि विकास हो और राज्य में स्थिर एवं मजबूत सरकार बने। आने वाले समय में बंगाल की जनता प्रचंड बहुमत से भाजपा को सत्ता में लाएगी और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राज्य में विकास की नई इबारत लिखी जाएगी। बंगाल की जनता परेशान है, विकास अवरुद्ध है। ऐसे में प्रगति के लिए भाजपा को चुनना जरूरी है। बांग्लादेशी घुसपैठ को रोकने के लिए भाजपा को जिताना है। बंगाल की जनता अब ठहराव नहीं, परिवर्तन और प्रगति की ओर बढ़ने को तैयार है। कई सालों से विकास की दौड़ में पीछे छूटा पश्चिम बंगाल, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार में नई ऊर्जा, नई दिशा और तेज प्रगति के साथ आगे बढ़ेगा। यहां के हर वर्ग के जीवन में जमीनी स्तर पर बदलाव नजर आएगा। उन्होंने कहा कि कोलकाता के अंदरुनी इलाकों में बहुत गरीबी है, हालात बेहद दयनीय हैं। बंगाल के युवाओं के पास रोजगार नहीं है, मजबूरी में लोगों को परिवार का पालन पोषण करने के लिए पलायन करना पड़ रहा है। पश्चिम बंगाल में हर क्षेत्र में विकास की असीमित संभावनाएं हैं। अब बंगाल की जनता टीएमसी के कुशासन और जंगलराज से मुक्ति चाहती है। बंगाल लगातार गर्त में जा रहा है, इसके उत्थान के लिए खिलता कमल और भाजपा की सरकार जरूरी है।

गुना में निहाल देवी मंदिर जा रही ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी

ट्रॉली में बैठे थे 25 लोग, पांच घायल; मन्नत पूरी होने पर दर्शन करने जा रहे थे

गुना (नप्र)। गुना के सिरसी इलाके में शनिवार को दोपहर 12 बजे निहाल देवी मंदिर जा रही श्रद्धालुओं से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसा पुतली घाटी के पास अंधे मोड़ पर हुआ, जब सामने से आ रही बाइक को बचाने के प्रयास में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दिए। इसी दौरान ट्रॉली संतुलन खो बैठी और पलट गई। ट्रैक्टर-ट्रॉली में 25 से ज्यादा लोग सवार थे, जो निर्भयगढ़ गांव से निहाल देवी मंदिर पूजा और भंडारे के लिए जा रहे थे। बताया गया कि एक परिवार ने मन्नत मांगी थी, जिसके पूरा होने पर सभी लोग पूजा-अर्चना के लिए रवाना हुए थे।

हादसे के बाद मौके पर मची चीख-पुकार- ट्रॉली पलटते ही मौके पर चीख-पुकार मच गई। आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। हादसे के बाद इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया और लोग घायलों की मदद के लिए दौड़ पड़े।

हादसे में एक ही परिवार के शियूकर बाई (40), ज्योति बाई (24), राहुल (23), कविता (8) और भूरी (5) घायल हो गए। सभी घायलों को पुलिस की मदद से जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है।

पुलिस ने शुरू की जांच, कारण अंधा मोड़ बताया गया- सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को संभाला। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार हादसा अंधे मोड़ पर बाइक बचाने के प्रयास में हुआ है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

राजगढ़-कुक्षी मार्ग पर यात्री बस पलटी, 14 यात्री घायल

राजगढ़-कुक्षी मार्ग पर शनिवार सुबह करीब 9:30 बजे एक निजी यात्री बस (भगवती) पलट गई। आंबासोटी घाट के पास हुए इस हादसे में 14 से अधिक यात्री घायल हो गए, जबकि एक युवक संजय के दोनों पैर बस के नीचे दब गए। युवक की पत्नी गले लगा बिलखती रही।यह बस राजगढ़ से टांडा बाग होते हुए मनावर की ओर जा रही थी। रिंगनौद के आगे टांडा घाट शुरू होते ही बस अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे के बाद यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। बस चालक मौके से फरार हो गया।सूचना मिलने पर रिंगनौद चौकी पुलिस तुरंत घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को निकालने और अस्पताल पहुंचाने का काम शुरू किया।

पत्नी को भी आई चोट- टांडा अस्पताल के डॉ. यतेंद्र जैन ने बताया कि ग्राम घर निवासी संजय के दोनों पैर बस के नीचे दबने से कुचल गए हैं और उन्हें रेफर किया गया है। उनकी पत्नी को भी चोटें आई हैं। टांडा अस्पताल में अब तक 7 घायल पहुंचे हैं।

भोपाल के पास है झिरी; यहीं से 26 अप्रैल से शुरुआत

बेतवा के उद्गम स्थल को जीवित करने चलेगा अभियान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पास झिरी गांव स्थित बेतवा नदी के उद्गम स्थल को पुनर्जीवित करने के लिए 26 अप्रैल से 2 मई 2026 तक एक सप्ताह का श्रमदान अभियान शुरू होगा। इस अभियान में मध्य प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से सामाजिक कार्यकर्ता, पर्यावरण कार्यकर्ता और स्थानीय ग्रामीण भाग लेंगे।

आयोजकों के अनुसार, पिछले वर्ष गर्मी के मौसम में बेतवा का उद्गम स्थल पूरी तरह सूख गया था। इसके बाद मई 2026 में एक सप्ताह का श्रमदान शिविर आयोजित किया गया था, जिसमें 55 चेक डैम बनाए गए थे। इन संरचनाओं के कारण जल संचयन में आंशिक सुधार हुआ और उद्गम स्थल पर पानी की उपलब्धता बढ़ी।

इसी क्रम में इस वर्ष फिर से अभियान चलाने का निर्णय लिया है। इस बार लक्ष्य उद्गम स्थल को पूरी तरह पुनर्जीवित करना और जल संरक्षण के स्थायी उपाय विकसित करना है। अभियान के दौरान चेक डैम निर्माण, जल प्रवाह मार्गों की सफाई और अन्य संरचनात्मक कार्य किए जाएंगे।

इस प्रयास में मप्र-छत्तीसगढ़ के पूर्व आयकर आयुक्त आरके पालीवाल, राज्यसभा टीवी के पूर्व सीईओ व वरिष्ठ पत्रकार राजेश बादल, कार्टूनिस्ट आबिद सूरती, वरिष्ठ पत्रकार अभिलाष खांडेकर व पद्मश्री बाबूलाल दाहिया समेत कई सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी, डॉक्टर और अन्य सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हो रहे हैं।

आयोजकों ने बताया कि यह पहल सामुदायिक सहभागिता पर आधारित है और इसमें किसी भी इच्छुक व्यक्ति को शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। उनका कहना है कि स्थानीय स्तर पर किए गए ऐसे प्रयासों से नदियों के संरक्षण में ठोस परिणाम मिल सकते हैं। बेतवा नदी मध्य भारत की प्रमुख नदियों में से एक है, जो मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बड़े हिस्से को प्रभावित करती है। ऐसे में इसके उद्गम स्थल का सूखना जल संकट और पर्यावरणीय संतुलन के लिहाज से महत्वपूर्ण मुद्दा माना जा रहा है।

संस्कारों की धरोहर से विश्व धरोहर को किया जा सकता है संरक्षित : बीके डॉ. रीना दीदी

भोपाल। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ब्लेसिंग हाउस सेवाकेंद्र द्वारा विश्व धरोहर दिवस को भारतीय संस्कृति, मूल्यों और प्राचीन धरोहरों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के अवसर के रूप में मनाया गया। सेवा केंद्र प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी ने बताया कि विश्व की धरोहर का संरक्षण करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का शिपिंग, एविएशन एवं टूरिज्म प्रभाग के अंतर्गत विश्व धरोहर दिवस पर 'मेरी संस्कृति, मेरी पहचान' कार्यक्रम के माध्यम से देश की विरासतों को संभालने का संदेश दिया गया।

दीदी ने कहा कि विश्व की धरोहर को संभालने के लिए हमें समाज में संस्कारों की धरोहर को भी बचाना होगा। दीदी ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और देवभूमि के रूप में भारत की पहचान पर भी प्रकाश डाला इस अवसर पर ऐतिहासिक मंदिर भोजपुर में 1 घंटे का विशेष राजयोग मेडिटेशन किया गया, राजयोग मेडिटेशन द्वारा देश की विरासतों को बचाने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम के पश्चात उपस्थित सभी भाई बहनों को बीके डॉ. रीना दीदी ने विश्व की धरोहर को संरक्षित करने के लिए प्रतिज्ञा कराई। दीदी ने कहा कि विरासत, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए आइए हम इसे संरक्षित करने का संकल्प लें।

खजुराहो में पारा 43.2 डिग्री, भोपाल-इंदौर से गर्म जबलपुर

प्रदेश के 9 शहरों में 42 डिग्री से ज्यादा; 16 जिलों में आज लू का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में भीषण गर्मी का दौर शुरू हो गया है। शुक्रवार को सीजन में पहली बार टेम्पेरेचर 43.2 डिग्री पहुंचा। यह छतरपुर के खजुराहो में दर्ज किया गया। वहीं, 9 शहरों में पारा 42 डिग्री से ज्यादा रहा।

मौसम केंद्र भोपाल ने शनिवार को 16 जिलों में हीट वेव यानी, लू की चेतावनी जारी की है। भोपाल में शनिवार से ही स्कूल नए समय तक लगेंगे। मौसम विभाग ने आज जिन जिलों में लू का अलर्ट जारी किया, उनमें अलीराजपुर, झाबुआ, रतलाम, धार, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना शामिल हैं।

भीषण गर्मी की वजह से सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के बच्चों के सामने मुश्किलें बढ़ गई थीं। तेज धूप के बीच वे घर लौट रहे थे। ऐसे में उनकी सेहत बिगड़ने का डर भी था। कलेक्टरों ने स्कूलों का समय बदल दिया।

राजधानी भोपाल में स्कूल सुबह 7.30 से दोपहर 12 बजे तक ही संचालित होंगे। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने यह आदेश जारी किए। वहीं, नर्मदापुरम, ग्वालियर, बालाघाट, मैहर, रतलाम, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, रायसेन, डिंडौरी, अनूपपुर और उमरिया में भी नई टाइमिंग तक ही स्कूल लगेंगे।

भोपाल कलेक्टर का आदेश, दोपहर 12 बजे तक चलेंगे नर्सरी से 12वीं तक के सभी स्कूल- मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में सूरज की तपिश और लू के बढ़ते प्रकोप ने आम जनजीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। बच्चों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए भोपाल जिला कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने शुक्रवार को स्कूलों के समय में संशोधन का कड़ा आदेश जारी किया है। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। कलेक्टर द्वारा जारी निर्देश के अनुसार, भोपाल जिले के सभी स्कूल, चाहे वे नर्सरी हों या कक्षा 12वीं तक। अब केवल सुबह 7:30 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक ही संचालित हो सकेंगे। यह नियम जिले के सभी शासकीय, निजी, एमपी बोर्ड, सीबीएसई, आईसीएसई और अन्य सभी मान्यता प्राप्त संस्थानों पर समान रूप से लागू होगा।

सिंहस्थ की तैयारी, 2,451 करोड़ से चमकेगा उज्जैन का इंफ्रास्ट्रक्चर

उज्जैन (नप्र)। बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन को वैश्विक स्तर के धार्मिक और पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए सरकार ने मास्टर प्लान तैयार कर लिया है। इस योजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा शिप्रा नदी को प्रदूषण मुक्त बनाना और घाटों का विस्तार करना है। इसके लिए रू. 2,698 करोड़ की भारी-भरकम राशि आवंटित की गई है, जो नदी के जीर्णोद्धार और श्रद्धालुओं की सुविधाओं पर खर्च होगी।

शिप्रा में मिलने वाले कान्ह नदी के प्रदूषित पानी को रोकने के लिए 919 करोड़ का क्लोज्ड-डक्ट डायवर्जन प्रोजेक्ट शुरू किया जा रहा है। इसके तहत 30 किलोमीटर लंबी नहर और टनल प्रणाली बनाई जाएगी। इसके अलावा, 614 करोड़ के सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी प्रोजेक्ट के जरिए 51 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी का भंडारण और विनियमन किया जाएगा, जिससे नदी में जल स्तर बना रहे।

टीकमगढ़ में कुएं में मिला मां-बेटे का शव

2 दिन से लापता थी महिला; मायके वालों ने ससुराल पक्ष पर लगाया हत्या का आरोप

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ के बल्देवगढ़ थाना क्षेत्र के भेलसी गांव में एक महिला और उसके दो साल के बेटे शव कुएं में संदिग्ध परिस्थितियों में मिले हैं। शुक्रवार शाम ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों शवों को कुएं से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

इस घटना के बाद मृतका के मायके वालों ने ससुराल पक्ष पर हत्या का आरोप लगाया है। आज शनिवार को दोनों का पीएम कराया गया।

भाई ने हत्या कर कुएं में शव फेंकने का लगाया आरोप- जानकारी के अनुसार, ग्राम भेलसी निवासी काशीबाई (28) पत्नी राहुल लोधी और उनके दो साल के पुत्र अभिराज के शव गांव के एक कुएं में मिले। बल्देवगढ़ थाना पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शवों को बाहर निकाला।

मौके पर पहुंचे मृतका के भाई सुंदर लोधी ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी बहन और भांजे की हत्या कर कुएं में फेंका गया है। उन्होंने बताया कि बहन के चेहरे पर चोट के निशान थे और पति राहुल लोधी सहित ससुराल पक्ष के लोग अक्सर उसके साथ मारपीट करते थे।

पीएम के बाद परिजनों को सौंपा गया शव- पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। रात होने और डॉक्टर उपलब्ध न होने के कारण शवों को जिला अस्पताल टीकमगढ़ की मर्चुरी में रखवाया गया। शनिवार को दोनों का पोस्टमार्टम कराया गया। घटना की सूचना पर थाना प्रभारी चंदन सिंह शाक्य, खरगापुर थाना प्रभारी अंबर सिकरवार और एसडीओपी राहुल कटरे मौके पर पहुंचे।

मृतका ने ससुराल पक्ष के खिलाफ की थी मारपीट की शिकायत

एसडीओपी राहुल कटरे ने बताया कि मामला संदिग्ध है और जांच के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी। उन्होंने दोषियों को बख्शा नहीं जाने का आश्वासन दिया। बताया जा रहा है कि 13 अप्रैल को महिला ने पति और परिजनों के खिलाफ मारपीट की शिकायत थाने में की थी। वहीं, परिजनों का आरोप है कि गुमशुदगी की सूचना देने पर भी पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की थी। फिलहाल, पुलिस सभी पहलुओं पर जांच कर रही है।

सीहोर में बेटे ने की पिता की पीट-पीटकर हत्या

रोते हुए बोली मां- बेटा लंबे समय से कर रहा था परेशान, अब मार डाला

सीहोर (नप्र)। सीहोर के गंज क्षेत्र के कोली मोहल्ले में शुक्रवार रात बेटे ने पिता की पीट-पीटकर हत्या कर दी। सूचना पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर पूछताछ शुरू कर दी है।

पिता-पुत्र के विवाद ने लिया खतरनाक रूप- कोली मोहल्ले में गंज निवासी सोनू शाक्य का अपने पिता सुभाष शाक्य से किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था। यह विवाद इतना बढ़ गया कि सोनू शाक्य ने अपने पिता पर हमला कर दिया और उनकी जमकर पिटाई की। इस हमले में सुभाष गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें परिजन और आसपास के लोगों की मदद से तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस घटना के बाद परिवार में मातम छा गया।

पुलिस ने आरोपी बेटे को किया गिरफ्तार- घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी बेटे सोनू शाक्य को हिरासत में ले लिया। फिलहाल आरोपी से थाने में पूछताछ की जा रही है। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि विवाद किस कारण से शुरू हुआ था। पुलिस हर पहलू से जांच कर रही है और आसपास के लोगों के बयान भी लिए जा रहे हैं, ताकि सच्चाई सामने आ सके।

मां का दर्द: 10 साल से कर रहा था परेशान

मृतक की पत्नी कृष्णा बाई ने बताया कि उनका बेटा लंबे समय से परिवार को परेशान कर रहा था। उन्होंने कहा कि वह करीब 10 साल से घर में विवाद करता आ रहा है और अक्सर झगड़ा करता रहता था। उनका बेटा छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करता था और हमेशा लड़ाई के लिए तैयार रहता था। उन्होंने कहा कि घर में अक्सर तनाव का माहौल बना रहता था।

पिता के टोकने पर भड़क जाता था बेटा

मां के अनुसार, यदि पिता उसके देर से घर आने या किसी बात पर सवाल करते थे, तो वह भड़क जाता था। उन्होंने कहा कि पिता को बेटे से सवाल पूछने का पूरा अधिकार था, लेकिन वह हर बार विवाद खड़ा कर देता था। इस घटना के बाद पूरे कोली मोहल्ले में सन्नाटा और दहशत का माहौल है। लोग इस बात से हैरान हैं कि एक बेटे ने अपने ही पिता की जान ले ली।

राइट क्लिक

क्या आर्थिक संरक्षण पर महिलाओं को सियासी आरक्षण ज्यादा भारी पड़ता?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

देश की आधी आबादी यानी महिलाओं को 33 फीसदी राजनीतिक आरक्षण देने वाला ऐतिहासिक बिल लोकसभा में जिस तरह गिर गया, उससे कई सवाल उठ रहे हैं। पहला तो यह कि संसद में जरूरी संख्या के आधार पर यह बिल जब पास ही नहीं होना था तो सरकार ने इतनी कवायद क्या सोच कर की? ऐसी कौन-सी इमरजेंसी थी कि इस बिल को पांच राज्यों में चलती चुनाव प्रक्रिया के दौरान ही लोकसभा में पेश करना पड़ा? इस बिल को परिसीमन के साथ जोड़ने के पीछे मोदी सरकार की असली नीयत क्या थी? विपक्ष इस महत्वाकांक्षी बिल का विरोध करके भी खुद को ज्यादा आश्वस्त क्यों महसूस कर रहा है? बड़ा सवाल तो यह है कि इस उठापटक का असल राजनीतिक लाभ किसे और कितना होगा? और इस सियासी लाभ का व्यावहारिक औचित्य कितना है? क्या वर्तमान में 12 राज्यों की 13 करोड़ से ज्यादा महिला मतदाताओं को मिल रहे आर्थिक संरक्षण (नकद रेवड़ी योजनाओं) के मुकाबले उन्हें राजनीतिक आरक्षण देने का ज्यादा फायदा सियासी दलों को होने वाला था या फिर यह सिर्फ एक नैतिक दावा और राजनीतिक खाम खयाली है?

ताबड़तोड़ अंदाज में बुलाए लोकसभा के विशेष सत्र और विपक्ष के साथ ट्यूनिंग के अभाव के बावजूद मोदी सरकार यह बिल लाई तो उसके पीछे यह गलतफहमी थी कि महिला मतदाताओं के व्यापक हितों के मद्देनजर विपक्ष इसका विरोध नहीं करेगा, क्योंकि देश में कुल मतदाताओं का आधा महिलाएं हैं और इसके विरोध का अर्थ महिला वोटरों को नाराज कर सत्ता की चाबी गंवाना है। यही कारण था कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद में अपनी गुहार में यहां तक कह दिया कि भले ही विपक्ष इसे पास कराने की क्रेडिट ले ले, लेकिन हमारी नैया पार करा दे। लेकिन विपक्षी ने पूरे मामले को दूसरा टर्न देते हुए इस बिल को लाने के पीछे की सरकार की नीयत पर सवाल खड़े कर दिए। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि इस बिल को परिसीमन से जोड़ने का असली उद्देश्य देश का चुनावी नक्शा बदलना है न कि महिलाओं को आरक्षण देना। उनका आरोप इस आशंका पर आधारित है कि केन्द्र सरकार ने हाल में असम और जम्मू कश्मीर में जिस तरह से विधानसभा सीटों का परिसीमन कराया, उसका ज्यादा लाभ भाजपा को हुआ अथवा हो सकता है। दूसरा मुद्दा देश का लोस सीटों के आधार पर उत्तर और दक्षिण के विभाजन का था। आरोप है कि परिसीमन के बाद दक्षिण भारत के पांच राज्यों की तुलना में उत्तर भारत के (खासकर उत्तर पश्चिमी राज्य) की सीटें बहुत ज्यादा बढ़ जाएंगी, क्योंकि उनकी आबादी तेजी से बढ़ी है। इससे संसद में जनप्रतिनिधित्व का क्षेत्रीय संतुलन बिगड़ेगा। हालांकि केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तमाम तकनीकी दिक्कतों का और सरकार की साफ मंशा का हवाला देते हुए इन आरोपों का खंडन किया, लेकिन उनकी बातें विपक्षी एकता की दीवार को रत्तीभर भी नहीं भेद सकीं। परिणास्वरूप जिसे आजाद भारत के इतिहास में ऐतिहासिक संशोधन बिल कहा जा रहा था, वह दो तिहाई बहुमत के अभाव में 54 मतों से ऐतिहासिक रूप से गिर गया। यहां तक कि लोकसभा की कुल 74 महिला सांसदों में से भी विपक्षी 38 महिला सांसदों ने बिल के विरोध में वोट दिया। बिल गिरने से महिलाओं को 33 फीसदी राजनीतिक आरक्षण का लाभ 2029 में तो नहीं ही मिल पाएगा। मोदी सरकार के 12 साल के कार्यकाल में यह पहला मौका था, जब सरकार की संसद में विधायी पराजय हुई। संसदीय इतिहास में 1990 में पंचायत सशक्तिकरण संशोधन बिल के राज्यसभा में गिरने के बाद यह पहला बिल है, जो लोकसभा में ही गिर गया। वैसे मोदी सरकार चाहती तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण बिल अपने दूसरे कार्यकाल में ला सकती थी, जब एनडीए के अपने 353 सांसद थे और कोई भी संशोधन बिल आसानी से पारित हो सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

हैरानी की बात यह है कि इस बिल के गिरने के बाद मोदी सरकार और सत्तारूढ़ एनडीए इसमें अपनी नैतिक जीत देख रहे हैं, जबकि विपक्ष को लगता है कि इस बिल को गिरा कर उसने भारत को बचा लिया है। संसद में इस बिल पर 21 घंटे चली बहस के दौरान सबसे ज्यादा आरोप यही लगे कि इसका समर्थन और विरोध दोनो के मूल में राजनीतिक लाभ की आकांक्षा है, फिर वो चाहे आगामी लोकसभा चुनाव में हो या विधानसभा चुनावों में। भाजपानीत एनडीए ने तो ऐलान कर दिया है कि वो इस मुद्दे को सड़कों तक ले जाएगी और बताएगी कि विपक्ष की महिला सशक्तिकरण को लेकर सोच क्या है। जबकि विपक्ष यह सोचकर बेफिकर है कि उसने महिला आरक्षण की आड़ में देश के चुनावी मानचित्र में बदलाव की चाल को विफल कर दिया है।

असली सवाल यह है कि देश की सर्वोच्च नीति निर्माता संस्था में महिलाओं को राजनीतिक आरक्षण की यह पहल अगर सफल हो जाती तो क्या इससे देश की करीब लगभग 70 करोड़ महिला आबादी सचमुच इतना आंदोलित कर पाती? इस आधी जनसंख्या की जमीनी आकांक्षाएं क्या केवल सत्ता में हिस्सेदारी है अथवा उनके लिए आर्थिक और सामाजिक संरक्षण इस आरक्षण की तुलना में बहुत ज्यादा और व्यावहारिक मायने रखता है? वजह साफ है। मोदी सरकार ने लोकसभा और विधानसभाओं में वर्तमान सीटों की संख्या एकमुश्त बढ़ाकर डेढ़ गुना करने का जो प्रस्ताव इस बिल में किया था, उसका लाभ कुल मिलाकर 2250 सीटों का होता। यानी लोकसभा में वर्तमान 545 सीटों के हिसाब से की महिलाओं की (33 प्रतिशत आरक्षण के हिसाब से) 205 सीटें बढ़तीं, जबकि सभी 28 राज्यों और दो केन्द्रशासित प्रदेशों की विधानसभाओं में 2045 सीटों का इजाफा होता। यानी 70 करोड़ महिलाओं में से मात्र 2250 महिलाएं चुनकर विधानमंडलों में पहुंचतीं। इसमें राज्यसभा और विधानपरिषदों की सीटें शामिल नहीं हैं, क्योंकि उनकी संख्या बाद में तय होगी। तर्क दिया जा सकता है कि इस आरक्षण को महिलाओं की संख्या की बजाए उनके राजनीतिक-सामाजिक सशक्तिकरण, लैंगिक समता और राजनीतिक नैतिकता की पवित्र मंशा के आईने में देखा जाना चाहिए। सही है। लेकिन अगर बिल पास होकर यह आरक्षण हो भी जाता तो असल फायदा कितनी महिलाओं को होता? कितनी महिलाएं ऐसी हैं, जिनके लिए राजनीतिक आकांक्षाएं सर्वोपरि हैं तथा परिवार और आर्थिक स्वावलंबन बाद में हैं। विडंबना ये है कि अभी जिन नगरीय निकायों और पंचायतों में महिला प्रतिनिधियों के लिए पचास फीसदी आरक्षण लागू है, वहां महापौर पति, पार्षद पति, पंच-सरपंच पति जैसी संविधानेतर संस्थाएं वजूद में आ गई हैं और बेखौफ दुकान चला रही हैं। इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि महिलाओं को राजनीतिक आरक्षण न दिया जाए या उन्हें उनके वाजिब अधिकारों से वंचित रखा जाए। लेकिन सिर्फ राजनीतिक लाभ की ही बात की जाए तो उनके लिए नकद रेवड़ी के रूप में दी जाने वाली छोटी-सी राशि भी किसी उस निर्वाचित पद की तुलना में ज्यादा मायने रखती है, जिसके लिए यह सब राजनीतिक घमासान चल रहा है। सत्ता के खेल में इन लाभार्थी महिलाओं की भूमिका कहीं ज्यादा अहम, ठोस और निर्णायक है, यह बीते दो साल में हुए विधानसभा चुनावों ने साबित कर दिया है। भले ही यह नैतिक रूप से गलत हो, लेकिन इसकी व्यावहारिक उपयोगिता और वोट की ताकत चुनाव शास्त्र की किताबों में दर्ज हो चुकी है। ऐसे में चाहे महिलाओं को राजनीतिक आरक्षण से होने वाले लाभ के दावे हों अथवा इसकी आड़ में सत्ता के चक्रव्यूह को भेदने के दावे हों, हकीकत में किसी को भी सियासी फायदा ज्यादा मिलेगा या घटेगा, इसकी संभावना बहुत कम है। अलबत्ता उन लोगों के राजनीतिक अरमानो को जरूर धक्का लग सकता है, जो महिला आरक्षण के बहाने परिवारवाद के विस्तार का एक और कोण तलाश रहे थे या फिर वो महिलाएं जिनके लिए राजनीति एक कॅरियर है, इनके अलावा राजनीतिक आरक्षण का यह मुद्दा नारी शक्ति को बहुत ज्यादा आंदोलित कर पाएगा, इसकी संभावना बहुत कम है।

कल बेकरार अब बेकार हैं

दृष्टिकोण

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

उन दिनों यानी 1980...! टाइम्स ऑफ इंडिया की फिल्मी पत्रिका 'माधुरी' के लिए फिल्मी कलाकारों के इंटरव्यू मुंबई में कर रहा था, मुफलिसी से दो- चार हाथ करने के लिए। उसी दौरान संपादक विनोद तिवारी ने अभिनेता रणधीर कपूर का इंटरव्यू करने के लिए कहा। उस समय 'हाथ की सफाई' रिलीज हुई थी और रणधीर के काम की तारीफ भी।

तब यह सुविधा थी कि किसी भी फ़िल्मी कलाकार को आप फोन लगा सकते थे और आम तौर पर कलाकार खुद ही फोन उठाते थे। चूंकि मोबाइल या ऐसा ही कोई 'जिन्न' तब तक नमूदार नहीं हुआ था, तो इधर-उधर यानी पास-पड़ोस से ही फोन लगाने होते थे। ज्यादातर दुकानों पर इस तरह की सुविधा थी कि चवन्नी देकर लोकल फोन कर सकते थे। रणधीर कपूर को तीन बार फोन किया, हर बार जवाब मिलता, बस दो रोज बाद मिलते हैं। इनकार करते नहीं और समय देते नहीं !

एक दिन चिढ़ कर उन्हें फोन लगाया जी, किसी भी आर्टिस्ट पर मैं सिर्फ चार चवन्नी यानी एक रुपया ही खर्च करता हूं। यह आखिरी चवन्नी है, यदि आज समय नहीं दिया तो फिर कभी फोन नहीं करूंगा। यह धमकी काम कर गई और रणधीर कपूर ने उसी वक्त मुझे घर बुलाया। ना सिर्फ लंबा इंटरव्यू दिया, खाना भी खिलाया और कार से स्टेशन तक छुड़वाया भी, यानी चवन्नी के फोन की उस समय कितनी वकत थी, अंदाजा लगा सकते हैं!

मुंबई में ही रहते यह समझ आया कि पड़ौसी का फोन यदि सुनने के लिए भी उपयोग किया है तो चवन्नी देना होती थी या ज्यादा भी। कोई आपको पड़ोसी के यहां फोन करे और आप उस समय नहीं हैं तो यह खबर देने के भी दाम चुकाने होते थे, जबकि आप खुद जाकर पूछते थे कि 'मेरा कोई फोन तो नहीं आया था।' भीख कभी नहीं मांगी, लेकिन फोन मालिक के सामने हमेशा यही एहसास बना रहा, जैसे हाथ में कटोरा लिए बैठा हूं। हां, दिन और रात के फोन का चार्ज भी अलग होता था, रात में दोगुना हो जाता था।

मुंबई में रहते हुए फोन की अहमियत समझ आती थी, लेकिन इंदौर लौटने पर भी कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। बस फोन सुनने के पैसे नहीं देना पड़ते थे। पड़ौसी फोन मालिक की बेरुखी बर्दाश्त करना फोन करने और सुनने की अनिवार्य शर्त हुआ करती थी। कई बार फोन दारों की फजीहत देख कर अपने यहां फोन नहीं होने का उत्सव भी मनाया है।

कल्पना कीजिए इस दृश्य की..., फोन वाले घर में बर्थडे पार्टी धूमधाम से चल रही है। तभी फोन की घंटी बजती है- जरा पड़ोस से मुन्नी की अम्मा को बुलवा दीजिए, जरूरी काम है। हरकारा बन मुन्नी की अम्मा को बुला लाए और जैसे ही फोन कान से लगाया हाय री अम्मा, ओ मेरी मां... कहते हुए मुन्नी की अम्मा वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी। पता चला, मुन्नी की अम्मा की अम्मा, जो यूपी में कहीं रहती थीं, जाती रहीं। अब बर्थडे की मोमबत्ती तो बगैर सुलगाए, बुझानी पड़ी, मुन्नी की अम्मा के डॉक्टर को बुलाना पड़ा। पूरा घर उस काले फोन को कोस रहा था। पति-पत्नी में झगड़ा हो गया पहले ही कहा था फोन मत लगवाओ, लगवा लिया है तो आवाज कम रखो कि किसी को खबर ना हो, लेकिन खुद को तो पुजवाने का बड़ा शौक है ना, लो अब भुगतो रोज का संताप !

तब काले फोन यानी लैंड-लाइन पर ट्रंक कॉल यानी दूसरे शहरों से देर रात ही आते थे कि आधे रेट थे और आसानी से लग भी जाते थे। जरूरतमंद यह तो याद रखने से रहे कि फोन वाला बेचारा सो भी सकता है। अब रात ढाई बजे ट्रंक कॉल आता है, फोन मालिक हड़बड़ा कर जागता है कि क्या मालूम बड़नगर वाले मौसाजी टें बोल गए हों और उधर से आवाज आती है सो रहे थे?

दरअसल, तीन नंबर वाले ज्ञानेशजी को बुलवा दें, आपका नंबर दिया था कि भले लोग हैं, जब चाहे फोन कर लेना, बुलवा देंगे।

अब बेचारे भले लोग चले तीन नंबर वाले को जगाने। दरवाजा खटखटाया तो अब आधी रात को कौन मरने आ गया? संवाद से स्वागत हुआ। संदेश दिया तो शर्मिंदगी के साथ माफी भी नत्थी कर दी जरूर कोई जरूरी काम होगा, कहा था जब तक टेलीग्राम वाली खबर ना हो, फोन मत लगाना, आपको खामख्वाह तकलीफ दी। आधे कपड़ों पर पूरे पहन कर साथ हो लिए। अब ये आपस में बात कर रहे हैं और हंसी-मजाक हो रहा है और फोन वाले इंतजार में हैं कि ये जाएं तो हम सोएं। पूरा घर जाग गया। ऐसे में फोन बंद भी तो नहीं कर सकते, क्या पता बड़नगर वाले मौसाजी...!

कुछ फोनदार इसी में पैसा वसूल समझते थे कि आगंतुक से पैसे नहीं लिए, तो कुछ उनके इस अहम से आहत होकर जिद पर अड़ जाते थे कि पैसा तो हमने अपने बाप का भी चुकाया है, आप कैसे नहीं लेंगे। नहीं लेंगे तो हम भी आज से ना फोन करने आएंगे और ना सुनने, चौराहे वाली पान की दुकान क्या दूर है हमसे। वो तो अपना समझ कर आ जाते थे यानी रिश्ते बनते कम और बिगड़ते ज्यादा थे। इस मोबाइल सुनामी ने इस तरह के ना जाने कितने रोचक और दिल दहला देने वाले किस्से खत्म कर दिए हैं। लैंड- लाइन से रिश्ते बनते और बिगड़ते थे, लेकिन उसमें अलग किस्म का रोमांच हुआ करता था। आज भी जब कुछ घरों में काले फोन लगे देखता हूं, मुंगेरीलाल के हसीन सपनों में खो जाता हूं।

पिछले दिनों लैंड-लाइन फोन की बेकद्री देखी तो अफसोस भी हुआ। किसी परिवार में बैठा था, कोने में काला पारंपरिक फोन भी था। यकायक उसकी घंटी बजने लगी। बरसों बाद सुनी थी, मन को अच्छा लगा। परिवार पर घंटी का कोई असर नहीं हुआ। सभी यूं बात करते रहे, जैसे कुछ हुआ ही ना हो। जब मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ तो आप का फोन बज रहा है...? बताया, तो किसी ने जवाब दिया आप ही उठा लो, हमारा तो होगा नहीं, मोबाइल है हमारे पास। बताइए, ऐसी भी क्या बेरुखी...!

जीवन में बदलाव: क्या आप अच्छे एडिटर हैं?

चौंक गये ना, ये कैसा सवाल है, एडिटर तो साहित्य, फिल्मों आदि के लिये होते हैं। वे जो अतिरिक्त या अनावश्यक सामग्री हटाते हैं। वैसे तो एडिटर सरल शब्दों में 'संपादक' भी होता है जो कच्ची सामग्री को अंतिम और त्रुटिहीन रूप देने वाला पेशेवर है। एडिटर बनने के लिये कुछ प्रोफेशनल डिग्री, साफ्टवेयर भी होते हैं।

यहाँ मैं जिस संदर्भ में कहना चाह रही हूँ वो आप की ज़िंदगी की एडिटिंग (कांट-छांट) के बारे में है। भला ज़िंदगी में एडिटिंग की क्या आवश्यकता है? सुबह से उठकर देखिये कि आप कितनी चीजें अनावश्यक कर रहे हैं। आप को प्रातःकाल रोज़ घूमने का शौक है, आप ग्रुप में घूमते हैं पर अक्सर आप झूंझला जाते हैं, सदस्यों के समय पर ना आने से तो आपकी सुबह खराब होती है। आप इस एडिटिंग में ये ना कहिये कि मैं अब घूमती ही नहीं। अब, बल्कि निर्धारित समय पर किसी के ना पहुँचने पर अकेली घूमने निकल पड़े ये आपके व्यक्तिगत स्वास्थ्य और मन के सुकून की बात है सो आप वो करिये जिससे आप को राहत मिले।

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

अब नाश्ते पे बात आती है आप वो खाती हैं जो घर के सभी सदस्य खाते हैं भूल रही हैं आप, सब अलग-अलग उम्र के हैं और सबकी आवश्यकतायें अलग-अलग हैं डॉक्टर ने आपको अतिरिक्त प्रोटीन लेने को कहा है और किसी को अतिरिक्त प्रोटीन मना है। (अब आप ये ना कहें कि कितने डिशेज बनायें) नाश्ते के मेनू को एडिट करें उसमें सबके, अपने हिसाब से जोड़े और कम करें और एक संतुलित नाश्ता करें।

कहावत है खायें अपने मन का और पहने सबके पसंद का, इसका अर्थ है कि स्वास्थ्य और पोषण को देखते हुये अपनी पसंद का पौष्टिक भोजन करें। जहाँ तक पहनने की बात है, यह सलाह सामाजिक, मेलजोल, शिष्टाचार और लोगों की भावनाओं का सम्मान करने के लिये दी जाती हैं। दूसरों की पसंद का पहनावा, पहनावा रिश्ते मजबूत करने और समाज में घुलने मिलने में मदद करता है।

ये तो हुई स्वास्थ्य और पहनावें की बात, अब आता है कैरियर। कैरियर में हम शुरूआती दौर में भ्रमित ही रहते हैं। हमारे ज़माने में एक नौकरी लगती थी तो हम रिटायर्ड होने तक उसी में रहते थे, कोई नौकरी बदलने का साहस नहीं करता था। आज की पीढ़ी के पास ढेरों ऑप्शन हैं समाज, ज़रूरत, माता-पिता की इच्छा से आप नौकरी चुनते हैं। आप सारे विकल्प सामने रख एक एक के सामने अपनी प्राथमिकता को रख के देखें ना कि दूसरों की मंशा क्या है इस पर सोचें पैसे से ऊपर जिस काम में आप की संतुष्टि आपको सुकून ज़्यादा है उसे चुनिये बाकी एडिट कर दीजिये।

सबसे अहम् बात है रिश्तों की एडिटिंग। देखिये आप जन्म से मिलने वाले रिश्तों को डिलीट नहीं कर सकते हैं। उन्हें भी एडिट कर सकते हैं। मसलन आप माता-पिता, बड़े सदस्यों की रोका टोकी से परेशान हैं तर्क एडिट कर दें उन्हें बोलने दें, सिर्फ सुनें आप को जो उचित लगता है उसे ग्रहण करें, बहस ना करें, जिन विषयों पर लड़ाई होती है उनको अपने संवाद में से एडिट करें। दोस्तों का बहुत शौक है आपको, बेशक खूब दोस्त बनायें, पर चूंकि आपको सीमायें तय करना नहीं आता और वो दोस्त आपकी निजी ज़िंदगी में घुसपैठ कर रहे हैं अब चूंकि दोस्ती गहन है तो धीरे धीरे अपने व्यवहार की एडिटिंग करें उसमें सर्वप्रथम अपनी सीमा रेखा खींच लें उसके आगे किसी को प्रवेश ना करने दें, ये हम ही हैं जो लोगों को अपनी ज़िंदगी में दखल देने देते हैं वो सच्चे दोस्त हैं तो वो आपकी प्रायवेसी व स्पेस की कद्र करेंगे और अगर दोस्ती बनायें रखना है तो एडजस्ट करेंगे आप के साथ, यूँ रिश्ते बने रहेंगे, संवरे रहेंगे।

भोजन की लिस्ट एडिट करें। कपड़ों की अलमारी की एडिटिंग बहुत आवश्यक है आजकल के विषय कि फलाने के यहाँ ये ड्रेस पहन चुके हैं फिर नये कपड़े खरीदे जाते हैं। 3 बॉक्स तैयार करें जिसमें जो अभी खरीदे हैं उन्हें रखें और पहनना भी शुरू कर दें कृपया बाद में पहनने का विचार बदल दें फैशन भी बदल जायेगा। दूसरी अलमारी में वो कपड़े रखें जिनसे आपने वादा किया था दुबले होने पर या बाद में देखेंगे। तीसरे वो कपड़े होते हैं, जो बांटे भी नहीं जा सकते और बार बार पहने भी नहीं जाते ऐसे कीमती कपड़ों को आल्टर करें उन पर चिट लगा दें कब पहना था (लहंगे, शरारे, शेरवानी वर्क वाले सूट, कुर्ते) अब दो साल बाद फैशन लौट कर आता है उन्हें तब तक के लिये रख दें फिर आल्टर कर पहनें। बीच वाली अलमारी के कपड़े आप नहीं पहनेंगे ये जान लें उन्हें फौरन बांट दें। ऐसे ही विचारों की एडिटिंग भी ज़रूरी है यहाँ भी मैं आपके विचारों की ही एडिटिंग करें दूसरे की नहीं पूरे विचार जो आपके मन में आते हैं उन्हें लिखें, जो आपको ओव्हरथिंकिंग कराते हैं उन्हें एडिट बॉक्स में डाल दें (न्यूरोफिजिशियन ये मानते हैं कि हम दिन भर में तीन चार बातें ही सोचते हैं परंतु उन्हें बार बार सोचते हैं ज़्यादातर ये बातें, धन, कैरियर रिश्तों को लेकर आती हैं) मस्तिष्क का बोझ हल्का करें जो बदली जा सकती है उसे बदलें और जो कष्ट पहुँचा रहे हों ऐसे विचारों को छोड़ने का प्रयास करें। रोज़ की दिनचर्या मसलन कब खाना, सोना, कब अपना ''मी टाइम'' रखें सब का रोज़ सुबह अवलोकन करें और एडिट कर दें। महीने में एक बार अपनी एडिट की ज़िंदगी पर नज़र डाले आप को लगेगा हम कितने अनावश्यक विषयों में उलझे पड़े थे यूँ आपकी ज़िंदगी क्लटर फ्री (कचरा रहित) हो जायेगी।

पुनःश्चः सबसे अहम् बात व्हाट्स अप पार आप को किसी ग्रुप में शामिल कर लिया जाता है आप के पास वक्त नहीं है, आप शालीनता से क्षमा मांग ग्रुप हटा दीजिये बाद में दिक्कत आ जायेगी आप घमंडी करार दिये जायेंगे। हर बार फोन पे जवाब देना ज़रूरी नहीं तत्काल सबके लिये उपलब्ध होने की आदत को छोड़ दीजिये मैसेज या वॉइस मैसेज से काम चलाइये सब को धीरे धीरे आप के स्वभाव का पता चल जायेगा और सब स्वीकार कर लेंगे।

चलिये ज़िंदगी के लिये कुछ यूँ प्लान करें। एडिटिंग शुरू करें-

(1) अतीत को याद करें- कि आप से क्या गल्तियाँ हुई थी उन्हें वर्तमान में एडिट कर दें।
(2) वक्त निकाल कर सोचें थोड़ा ठहर जायें।
(3) हर रोज़ अपने प्लान को देखें और एडिट करें।
(4) नकारात्मक चीजें एडिट करें मसलन फैट फ्री भोजन करें, झूठ बोलना छोड़े,

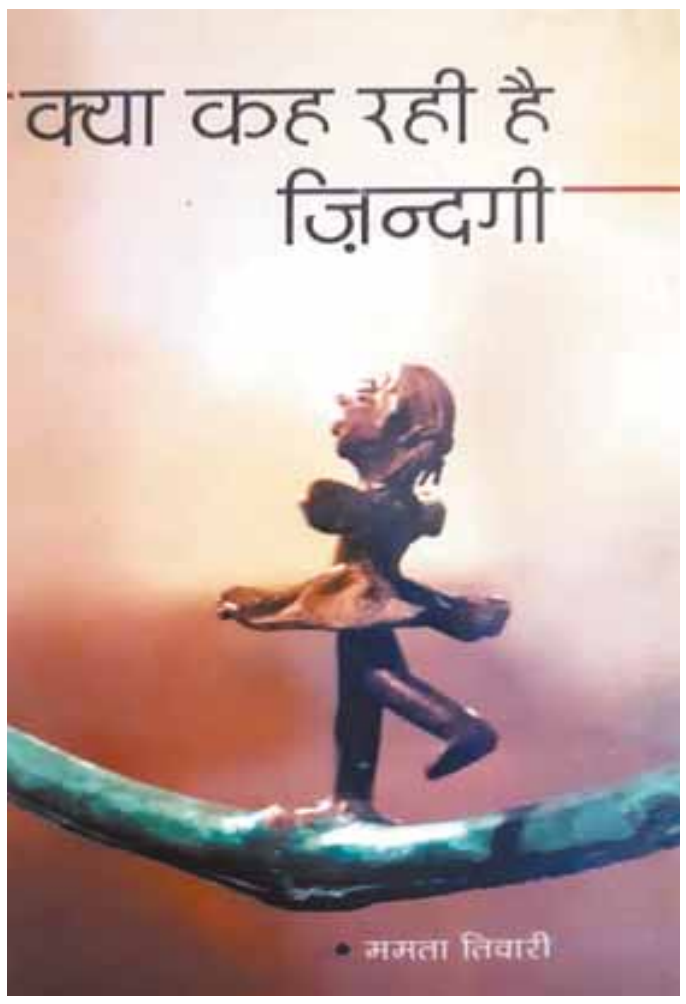

फास्ट फूड ना लें।
(5) सकारात्मक ग्रुप, बातों, ध्यान केन्द्रों में जायें।
(6) हर रोज़ नहीं तो हर सप्ताह कोई नई किताब या नई चीज सीखें पुरानी बुरी आदत मसलन मोबाइल बिंज वाचिंग एडिट करें।
(7) आभारी रहें, शिकायतें एडिट कर दें।
(8) सहयोग लें, असहयोग एडिट कर दें।

आज से ही शुरूआत करें और रोज़ ज़िंदगी को एडिट करते पूछें और क्या कह रही हो?

हम क्यों खोजें जिंदगी के मायने हरदम
क्यों वक़्त ज़ाया करें इस बेकार बात पें
क्यों चाहिये हर बार जीने की वजह हमें
कभी-कभी बेवजह भी तो जी के देखें
समंदर की छाती पे झूलें
खिड़की से हाथ निकाल आसमाँ छूले
नदियों की गहराई नापें
सर्दियों में सिगड़ी तापें
घने जंगलों में पेड़ों से करे सरगोशी
ज़ोर से चीख कर तोड़ दे मन की ख़ामोशी
सुने पुकारे बाहे फैलाते पहाड़ों की
कैद करें तस्वीर खूबसूरत नज़ारों की
करें महसूस अंधेरे में झींगुर की झुन-झुन
पैदा करें कभी अपनी ही धुन
बैठ अकेले कभी मीठी यादें गुने
रूपहली रातों में सुनहरे सपने बुने
बेमतलब बात को कबीर की तरह धुनें
छोड़ के शोरगुल ज़माने का
आज सिर्फ अपने दिल की सुने
जियो बेवजह।

जानापाव में आकार लेगा

भव्य श्री परशुराम लोक

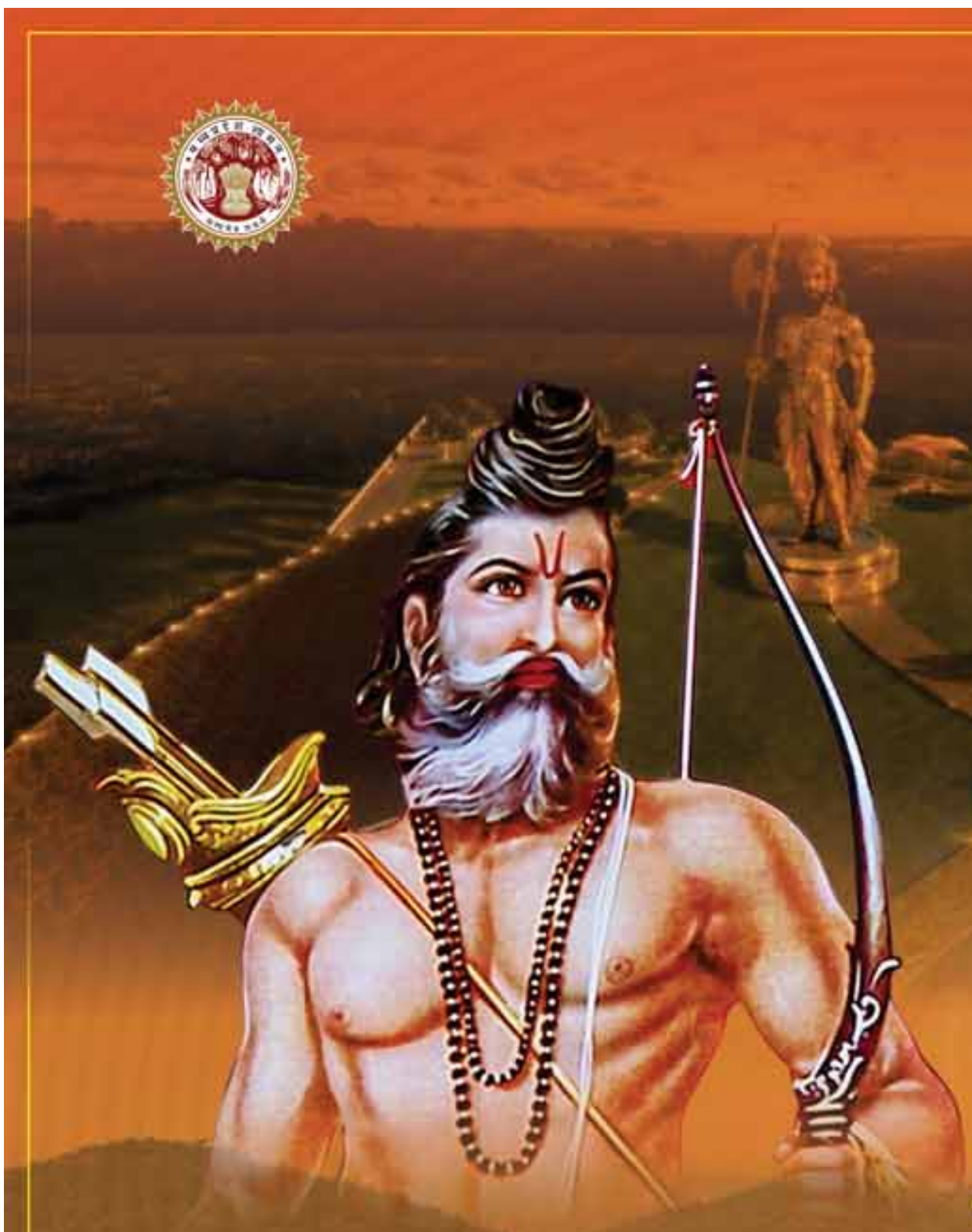

धर्म, शौर्य, ज्ञान और न्याय के दिव्य प्रतीक

भगवान श्री परशुराम का पावन प्रकटोत्सव

गरिमामयी उपस्थिति

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

19 अप्रैल 2026 | जानापाव कुटी, इंदौर

भगवान श्री परशुराम तप, शौर्य और न्याय परंपरा के प्रेरणास्रोत हैं। हम उनके आदर्शों को आत्मसात कर हर वर्ग के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। जानापाव में 'श्री परशुराम लोक' का निर्माण हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का प्रयास है। निश्चित रूप से यह भव्य लोक भगवान श्री परशुराम की गौरवगाथा को जन-जन तक पहुंचाने का अद्वितीय माध्यम बनेगा।

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

D-11011/26

सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhypradesh @jansamparkMP JansamparkMP

डॉ. मोहन यादव का अभ्युदय मध्यप्रदेश